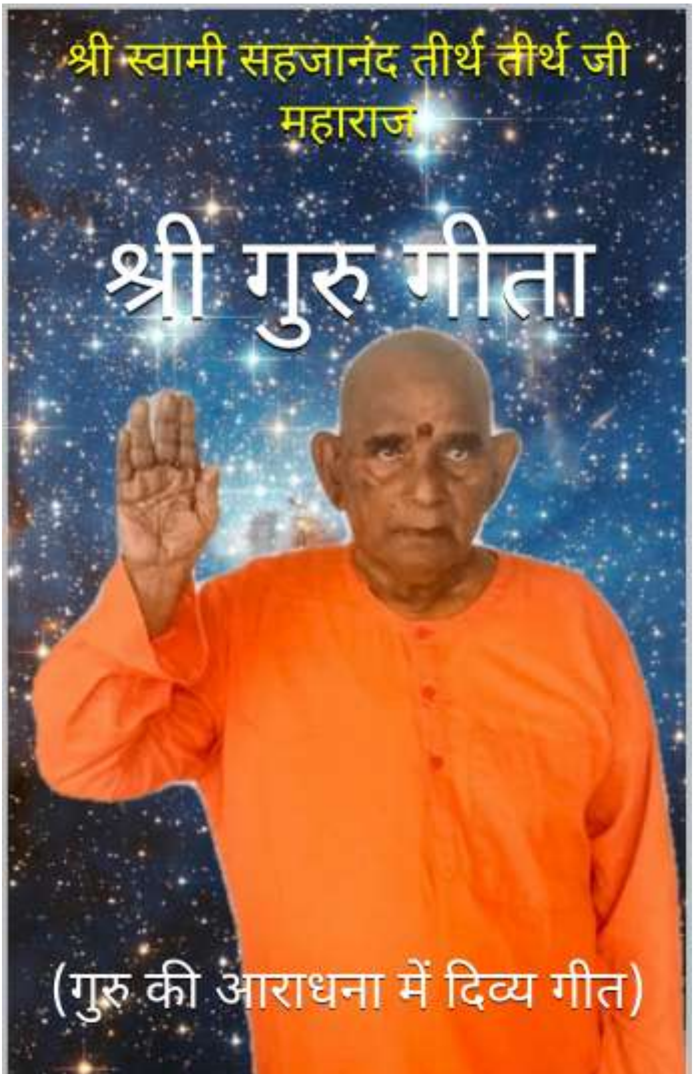
श्री स्वामी सहजानंद तीर्थ तीर्थ जी
महाराज
श्री गुरु गीता
(गुरु की आराधना में दिव्य गीत)

Copyright © 2020 T Sreenivasulu

कॉपीराइट © 2020 टी. श्रीनिवासुलु
सभी अधिकार सुरक्षित।

www.sahajananda-ashram.com

समर्पण

मेरे प्यारे गुरु जी को परम पूज्य श्री स्वामी शिवोम तीर्थ जी महाराज

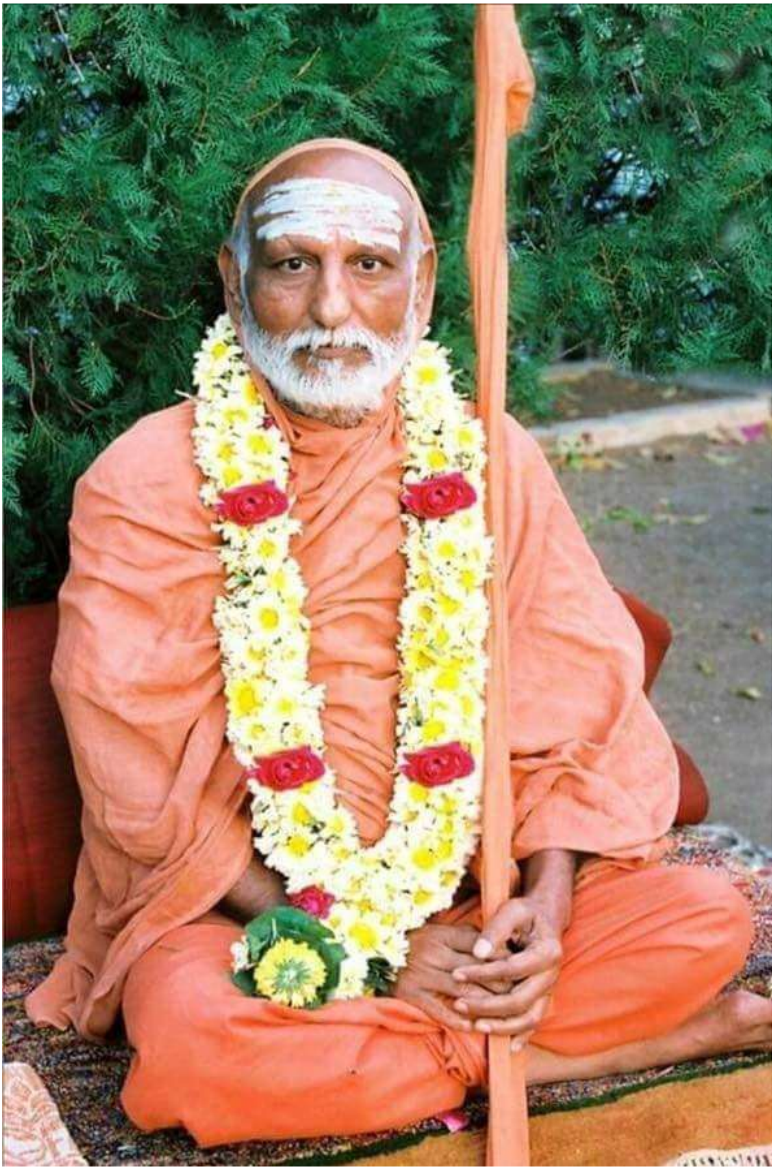

परम पूज्य श्री स्वामी शिवोम तीर्थ जी महाराज

विषय सूची

आभार

परिचय

श्री गुरू गीता

शब्दावली

शक्तिपात पद्धति के आश्रम

शक्तिपात पद्धति के संत

आभार

मैं भारतीय सेना के अपने शिष्य कर्नल टी श्रीनिवासुलु द्वारा सभी आवश्यक समन्वय करने और अंत में इसके प्रकाशन को सुनिश्चित करने के लिए किए गए प्रयासों का विशेष उल्लेख करना चाहूंगा। सर्वोच्च देवता उनको आशीर्वाद दें। जो कुछ भी चाहते हैं वह पूर्ण हो!

मैं रांची शहर की मनीषा अडूकिया का आभार व्यक्त करना चाहूंगा। उन्होंने इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद किया। साथ ही मैं गाजियाबाद के अनुराग शर्मा का भी आभार व्यक्त करना चाहूंगा। उन्होंने इस पुस्तक के हिंदी अनुवाद में अपना योगदान दिया। उन दोनों पर सर्वोच्च ब्रह्मांडीय शक्ति हमेशा दिव्य अनुग्रह की बौछार करती रहे।

परिचय

गुरु गीता मानव के आत्म-साक्षात्कार की स्थिति को प्राप्त करने के क्रम में, गुरु की अनिवार्य आवश्यकता के बारे में भगवान शिव और उनकी पत्नी देवी पार्वती के बीच एक संवाद है। यह एक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ "स्कंदपुराण" का एक भाग है।

यह एक असाधारण पुस्तक है जो प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उसकी धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि के पृथक पढ़ने योग्य है।

किसी भी धार्मिक दृष्टिकोण से इस पुस्तक में ऐसा कुछ भी विवादास्पद नहीं है। हालाँकि यह एक हिंदू देवता और उनकी पत्नी के बीच एक संवाद के रूप में है, लेकिन विषय पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष है। किसी भी व्यक्ति के लिए गुरु की अनिवार्य आवश्यकता ही इस संपूर्ण ग्रन्थ का सार है।

साथ ही, यह सीधे तौर पर घोषणा करता है कि एक गुरु वास्तव में सर्वोच्च देवत्व के अलावा और कोई नहीं है, जो पृथ्वी पर कुछ शिष्यों को आत्म-साक्षात्कार के मार्ग को प्रज्वलित करने के उद्देश्य से एक विशेष मानव रूप के माध्यम से प्रकट होता है।

इसकी शिक्षाएं अपने आप में बहुत गहरी और प्रेरणादायक है। विषय को जिस तरह से साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया गया है उससे हर पाठक मंत्रमुग्ध हो जाता है। हालांकि, प्रत्येक को इसे अतिव्यापक दृष्टिकोण के साथ समझने का प्रयास करना चाहिए।

इसे आधुनिक विज्ञान और समाज के साथ समायोजित करने का कोई अर्थ नहीं है। इसकी शिक्षाएं सभी समय अथवा काल के लोगों के लिए यथार्थ है। यह पुस्तक इतने लंबे समय के बाद भी सभी योग साधकों का ध्यान आकर्षित कर रही है, यह लेखक की विषय पर गहन समझ का परिसूचक है।

पुस्तक का शब्दशः अनुवाद किया गया है। हालांकि, इसका अनुवाद करते हुए विषय का सन्दर्भ निश्चित ही ध्यान में रखा गया है।

जहां आवश्यक हो वहाँ पर्याप्त स्पष्टीकरण कोष्ठक में दिया गया है। ताकि, सभी संस्कृतियों के लोग इस विषय को आसानी से समझ सके । हालांकि, गंभीर प्रकार के पाठकों के लाभ के लिए और शैक्षणिक दृष्टिकोण से भी, मूल उद्धरण को देवनागरी लिपि में रोमन लिपि के साथ भी दिया गया है।

यहां तक कि अगर उन पाठकों द्वारा कुछ त्रुटियां पाई जाती हैं, जो संस्कृत भाषा के अच्छे जानकार हैं, तो अनुवादित उद्धरण का कोई संज्ञान लेने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आजकल संस्कृत में मूल पाठ की बहुत अधिक व्याख्याएँ उपलब्ध हैं। यह हज़ारों में एक होने जैसा संयोग ही होगा।

फिर भी, अनूदित पुस्तक बहुत ही सारगर्भित है और पाठकों को यह बात स्पष्ट हो जाएगी। अर्थात पाठक इस अनुवाद से पूर्ण संतुष्ट होंगे, भले ही वे मूल संस्कृत भाषा के अच्छे जानकार हों।

इन सबसे ऊपर, पुस्तक पढ़ने योग्य है, भले ही कुछ पाठकों को लगे कि व्याख्या संतोषजनक नहीं है। भाव यही है कि, पाठक को सर्वोच्च लाभ मिले।

- श्री स्वामी सहजानंद तीर्थ जी महाराज

श्री गुरुगीता

Śrī gurugītā

1. एक शुभ दिन, कैलाश पर्वत के शिखर पर, मनोहर प्राकृतिक सौंदर्य के बीच, प्रकृति की देवी, पार्वती देवी, ने अपने प्रिय भगवान शंकर को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। मनुष्यों द्वारा सभी भक्ति प्रथाओं के राजा को परम भक्ति के साथ प्रश्न किया:

कैलास शिखरे रम्ये, भक्ति संधान नायकम् ।

प्रणम्य पार्वती भक्त्या, शंकरं पर्यपृच्छत ॥

kailāsa śikhare ramye, bhakti saṃdhāna nāyakam I

praṇamya pārvatī bhaktyā, śaṃkaraṃ paryapṛcchata II

सौभाग्यवती स्त्री (देवी) इस प्रकार कहने लगी:

2. हे देवताओं के स्वामी! हे आदरणीय गुरु! समस्त जगत के आदरणीय गुरु हे सदाशिव (भगवान शिव)! हे विराट सर्वशक्तिमान! आपको श्रद्धायुक्त नमन। कृपया मुझे गुरु के प्रति समर्पण के ज्ञान का आशीर्वाद दें।

ओं नमो देवदेवेश परात्पर जगद्गुरोः ।

सदाशिव महादेव गुरुदीक्षाम् प्रदेहि मे ॥

oṃ namo devadeveśa parātpara jagadguroḥ I

sadāśiva mahādeva gurudīkṣām pradehi me II

3. हे प्रभु! मैं आपके चरणों में नमन करती हूं। हे ईश्वर! ब्रह्म (सर्वोच्च सार्वभौमिक आत्मा या देवत्व या सर्वशक्तिमान) की मनःस्थिति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को किस मार्ग (मांस और रक्त के स्थूल शरीर के साथ) का पालन करना चाहिए?

केन मार्गेण भो स्वामिन् देहि भ्रह्ममयो भवेत् ।

त्वं कृपां कुरु मे स्वामिन् नमामि चरणौ तव ॥

kena mārgeṇa bho svāmin dehi bhrahmamayo bhavet I

tvaṃ kṛpāṃ kuru me svāmin namāmi caraṇau tava II

महेश्वर (शिव) इस प्रकार कहने लगे;

4. हे देवी! (भगवती) यद्यपि आप मेरी पूर्ण स्व हैं अर्थात आपमें मेरा ही रूप हैं (परम देवता और उनकी ऊर्जा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, इसलिए उन्हें दो अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में पृथक नहीं किया जा सकता है), आप मुझसे यह प्रश्न परोपकारी उद्देश्य से पूछ रहीं हैं! इस तरह का प्रश्न पहले कभी किसी ने नहीं पूछा था। मैं आपकी खुशी के लिए आपके प्रश्नों का उत्तर अवश्य दूंगा।

मम रूपासि देवीत्वं तत्प्रीत्यर्थं वदाम्यहं ।

लोकोपकारकः प्रश्नो न केनापि कृतः पुरा ॥

mama rūpāsi devītvaṃ tatprītyarthaṃ vadāmyahaṃ I

lokopakārakaḥ praśno na kenāpi kṛtaḥ purā II

5. मैं अब आपको तीनों लोकों (प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में वर्णित अस्तित्व के तीन स्तर) में से किसी को भी प्राप्त करने के लिए सर्वोच्च और कठिन सत्य प्रकट कर रहा हूं। कृपया श्रवण कीजिये! मनुष्य के लिए आदरणीय शिक्षक या गुरु के अलावा कोई अन्य ईश्वर नहीं है। अर्थात एक मनुष्य के लिए वह (पूजनीय और विश्वास करने के लिए सर्वोच्च शक्ति) आदरणीय शिक्षक या गुरु के रूप में है।

दुर्लभं त्रिषु लोकेषु तच्छृणुष्व वदाम्यहं ।

गुरुं विना ब्रह्म नान्यत् सत्यं सत्यं वरानने ॥

durlabhaṃ triṣu lokeṣu tacchṛṇuṣva vadāmyahaṃ I

guruṃ vinā brahma nānyat satyaṃ satyaṃ varānane II

6-7. वे मनुष्य जो माया के या ईश्वरीय ज्ञान से विमुख हो कर अज्ञान के वशीभूत रहते हैं, उनके लिए वेदों, प्राचीन विज्ञानों, प्राचीन महाकाव्यों, प्राचीन इतिहास, मंत्रों, यन्त्र और तंत्र, स्मृतियों से संबंधित विज्ञान और शैव और शक्तिवाद के आगमों से संबंधित विभिन्न शास्त्रों के उपदेश एक नकारात्मक सत्य को व्यक्त करते हुए प्रतीत होते हैं।

वेदशास्त्र पुराणानि इतिहासादिकानि च ।

मंत्र, यंत्रादि विद्याश्च स्मृति रुच्चाट नादिकम् ॥

शैव शाक्ता गमादीनि अन्यानि विविधानि च ।

अपभ्रंश कराणीह जीवनां भ्रान्त चेतसाम् ॥

vedaśāstra purāṇāni itihāsādikāni ca I

maṃtra, yaṃtrādi vidyāśca smṛti ruccāṭa nādikam II

śaiva śāktā gamādīni anyāni vividhāni ca I

apabhraṃśa karāṇīha jīvanāṃ bhrānta cetasām II

8. गुरु तत्व जाने बिना; यज्ञ (यज्ञोपवीत संस्कार), व्रत (आध्यात्मिक साधना), तप (ध्यान), दान, कर्म, जप (मंत्रों का

जाप), तीर्थयात्रा आदि विभिन्न रूपों में मानव जाति द्वारा किए गए देवताओं की सभी प्रार्थनाएं सर्वथा हानि का कारण बनती हैं। वे (उपरोक्त व्यवहार करने वाले) केवल अंधविश्वास के अनुयायी बने रहते हैं।

यज्ञोव्रतं तपोदानं जपस्तीर्थं तथैव च ।

गुरुतत्वमविज्ञाय मूढास्ते चरते जनाः ॥

yajñovrataṃ tapodānaṃ japastīrthaṃ tathaiva ca I

gurutatvamavijñāya mūḍhāste carate janāḥ II

9. एक आदरणीय गुरु तत्व के ज्ञान से; आत्मन (मानव शरीर के मूल में रहने वाली व्यक्तिगत आत्मा) के अतिरिक्त और कुछ भी उपस्थित नहीं है, यह शाश्वत सत्य प्रकट होता है। यह सर्वोच्च सत्य है। इसलिए हे पार्वती! मानव जाति के बीच बुद्धिमान व्यक्ति प्रत्येक समय "आदरणीय गुरु तत्व" के इस ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करते रहते हैं।

गुरुबुध्यात्मनो नान्यत् सत्यं सत्यं न संशयः ।

तल्लाभार्थं प्रयत्नस्तु कर्तव्यो हि मनीषिभिः ॥

gurubudhyātmano nānyat satyaṃ satyaṃ na saṃśayaḥ I

tallābhārthaṃ prayatnastu kartavyo hi manīṣibhiḥ II

10. मनुष्य के शरीर में दिव्य प्रकृति का विकास या अज्ञानता कैसे उत्पन्न होती है? गुप्त विज्ञान शब्द का क्या अर्थ है? माया का क्या रहस्य है जिसके परिणामस्वरूप मनुष्यों द्वारा अनुभव किये जा रहे संसार का निर्माण होता है? इन गहन रहस्यों को जानने के लिए, गुरु शब्द की ध्वनि का प्रवाह अनिवार्य है। (यहां "गुरु" शब्द के ध्वनि रूप के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।)

गूढविद्या जगन्माया देहेचाज्ञान संभवा ।

उदयः यत् प्रकाशेन गुरु शब्देन कथ्यते ॥

gūḍhavidyā jaganmāyā dehecājñāna saṃbhavā I

udayaḥ yat prakāśena guru śabdena kathyate II

11. लोग आदरणीय गुरु के चरणों की सेवा करते हुए शरीर बदलते रहने वाले जीवन और मृत्यु के चक्र के बंधन से मुक्त हो जाते हैं। इस गुप्त ज्ञान को प्रकट करने के लिए आपके द्वारा किये गये अनुरोध पर; मैं इसे आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं।

सर्वपाप विशुद्धात्मा श्रीगुरो पादसेवनात् ।

देही ब्रह्म भवेद्यस्मात् त्वत् कृपार्धं वदामि ते ॥

sarvapāpa viśuddhātmā śrīguro pādasevanāt I

dehī brahma bhavedyasmāt tvat kṛpārdhaṃ vadāmi te II

12. अपने आदरणीय गुरु की पूजा करने के बाद, यदि कोई अपने गुरु के पैर धोता है और जो पानी धोने में उपयोग किया जाता है उसको अपने सिर पर छिड़कता है, तो उनको वह लाभ प्राप्त होगा जो कि दुनिया के सभी पवित्र तालों में स्नान करने से प्राप्त होता है।

गुरुपादांबुजं स्मृत्वा जलं सिरसि धारयेत् ।

सर्वतीर्धावगाहस्य संप्राप्नोति फलं नरः ॥

gurupādāṃbujaṃ smṛtvā jalaṃ sirasi dhārayet I

sarvatīrdhāvagāhasya saṃprāpnoti phalaṃ naraḥ II

13. आदरणीय गुरु के चरणों के स्पर्श से पवित्र हुआ जल, किसी व्यक्ति को शरीर बदलते रहने वाले जीवन सागर को पार करने के लिए पर्याप्त है। यह पापी कृत्यों की गंदगी को धोने के लिए भी अत्यंत शक्तिशाली है। और व्यक्ति में ज्ञान की आग को प्रज्वलित करता है।

शोषणं पापपंकस्य, दीपनं ज्ञान तेजसाम् ।

गुरु पादोदकं सम्यक् संसारार्णव तारकम् ॥

śoṣaṇaṃ pāpapaṃkasya, dīpanaṃ jñāna tejasām I

guru pādodakaṃ samyak saṃsārārṇava tārakam II

14. व्यक्ति को इस पवित्र जल को गुरु के चरणों से ग्रहण करना चाहिए, जिससे वह कुसंस्कारों को उखाड़ कर नष्ट कर सके, और जन्म और मृत्यु के कर्म चक्र से मुक्त हो सके, और प्राप्त ज्ञान से वैराग्य का जन्म हो।

अज्ञान मूलहरणं, जन्मकर्म निवारणम् ।

ज्ञानवैराग्य सिद्ध्यर्थं गुरुपादोदकं पिबेत् ॥

ajñāna mūlaharaṇaṃ, janmakarma nivāraṇam I

jñānavairāgya siddhyarthaṃ gurupādodakaṃ pibet II

15. गुरु के चरणों से निकलने वाले पवित्र जल (एक गुरु के पैर धोने के लिए उपयोग किया जाने वाला पानी) का उपभोग करना, गुरु द्वारा बचे हुए खाद्य पदार्थों को स्वीकार करना, और "प्रसाद" (जो भगवान की वेदी पर चढ़ाए जाने के बाद शिष्य के पास शेष वापस लौट आए) को ग्रहण करना, हमेशा आदरणीय गुरु का ध्यान करना और गुरु द्वारा दिए गए मंत्र के "जप" (दोहराव) करना, शिष्य या विद्यार्थी का यही पवित्र कर्तव्य हैं।

गुरोः पादोदकं पीत्वा, गुर॒॑रुच्छिष्ट भोजनम् ।

गुरु मूर्तेः स्सदा ध्यानं गुरुमंत्रं सदा जपेत् ॥

guroḥ pādodakaṃ pītvā, gura॒॑rucchiṣṭa bhojanam I

guru mūrteḥ ssadā dhyānaṃ gurumaṃtraṃ sadā japet II

16. एक आदरणीय गुरु का निवास (जहाँ वह रहता है) वास्तव में काशी शहर जैसे पवित्र केंद्र के समान है (भारत में काशी अब वारणसी आधुनिक शहर है)! उनके पैरों से निकलने वाला पवित्र जल वास्तव में गंगा नदी के पवित्र जल के बराबर है। गुरु वास्तव में ब्रह्मांड (विश्वनाथ) के स्वामी हैं। वह वास्तव में सर्वोच्च ब्रह्म है जो मुक्ति या मोक्ष के लिए मंत्र देते हैं।

काशीक्षेत्रं तन्निवासो, जाह्नवी चरणोदकम् ।

गुरोः विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्मनिश्चितम् ॥

kāśīkṣetraṃ tannivāso, jāhnavī caraṇodakam I

guroḥ viśveśvaraḥ sākṣāt tārakaṃ brahmaniścitam II

17. उस आदरणीय गुरु के प्रति समर्पण, जिनका पवित्र जल (उनके चरणों को धोने के लिए उपयोग किया जाने वाला जल) वास्तव में गया (भारत में गया आधुनिक शहर) के पवित्र झरने के बराबर है। उस आदरणीय गुरु के प्रति समर्पण जो वास्तव में बहुत ही पवित्र पात्र "अक्षय पात्र" हैं (दैवीय इच्छा-पूर्ति करने वाला पात्र जो कुछ भी खाने की इच्छा करने पर उस इच्छा किये गये भोजन से भर जाता है)। उस आदरणीय गुरु के प्रति समर्पण जो वास्तव में "प्रयाग" (भारत में प्रयागराज आधुनिक शहर है जहां तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है) का पवित्र संगम है।

गुरोः पादोदकं यत्तु गयाऽसौ सौऽक्षयोवटः ।

तीर्थराज प्रयागश्च, गुरुमूर्ते नमो नमः ॥

guroḥ pādodakaṃ yattu gayā'sau sau'kṣayovaṭaḥ I

tīrtharāja prayāgaśca, gurumūrte namo namaḥ II

18. व्यक्ति को हमेशा आदरणीय गुरु के रूप का ध्यान करते रहना चाहिए। इसी प्रकार सदैव गुरु के नाम का जप (पुनरावृत्ति) करते रहना चाहिए। इसके अलावा, व्यक्ति को गुरु के आदेशों का पालन करना चाहिए और उन्हें नियमित रूप से जीवन में लागू करना चाहिए। व्यक्ति को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि अपने आदरणीय गुरु के रूप के अलावा किसी भी व्यक्ति का रूप और अधिक पवित्र नहीं है। और इस प्रकार उसे अपना सिर झुका कर अपने गुरु को सदा प्रणाम करना चाहिए।

गुरुमूर्तिं स्मरेन्नित्यं गुरुनामं सदा जपेत् ।

गुरोराज्ञं प्रकुर्वीत, गुरोरन्यन्न भावयेत् ॥

gurumūrtiṃ smarennityaṃ gurunāmaṃ sadā japet I

gurorājñaṃ prakurvīta, guroranyanna bhāvayet II

19. गुरु की वाणी हमेशा ब्रह्म के पवित्र ज्ञान से ओतप्रोत रहती है और यह ज्ञान केवल उनकी कृपा से प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार एक भद्र विवाहित महिला किसी अन्य पुरुष (अपने पति के अलावा) का विचार नहीं करती है, उसी प्रकार

शिष्य को हमेशा अपने पूज्य गुरु के रूप की ही पूजा और ध्यान करना चाहिए।

गुरुवक्त्र स्थितं ब्रह्म, प्राप्यते त्रत्पसादतः ।

गुरोध्यानं सदाकुर्यात् कुलस्त्री स्वपतेर्यथा ॥

guruvaktra sthitaṃ brahma, prāpyate tratpasādataḥ I

gurodhyānaṃ sadākuryāt kulastrī svapateryathā II

20. वर्तमान जीवन, परिवार, जाति, प्रसिद्धि, धन, आदि के प्रति लगाव को पूरी तरह से त्याग कर, व्यक्ति को एक आदरणीय गुरु की शरण लेनी चाहिए (ऊपरयुक्त वस्तुएँ गुरु का ध्यान करने के रास्ते में बाधक नहीं बननी चाहिए)।

स्वाश्रमं च स्वजातिं च स्वकीर्तिं पुष्ठिवर्धनम् ।

एतत्सर्वं परित्यज्य गुरोरन्यन्न भावयेत् ॥

svāśramaṃ ca svajātiṃ ca svakīrtiṃ puṣṭhivardhanam I

etatsarvaṃ parityajya guroranyanna bhāvayet II

21. आदरणीय गुरु के प्रति अत्यधिक समर्पण के परिणामस्वरूप, अनंत ब्रह्म के ज्ञान को आसानी से प्राप्त करना संभव है। इसलिए सदैव वंदनीय गुरु की आराधना करें!

अनन्याश्चिन्तयन्तोमां, सुलभं परमं पदम् ।

तस्मात् सर्व प्रयत्नेन, गुरोराराधनं कुरु II

ananyāścintayantomāṃ, sulabhaṃ paramaṃ padam I

tasmāt sarva prayatnena, gurorārādhanaṃ kuru II

22. सभी विज्ञानों का ज्ञान केवल एक आदरणीय गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है, और तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, पितृ लोक और मृत्यु लोक) में विशिष्टता से स्वीकार किया जाता है।

त्रैलोक्ये स्फुटवक्तारो, देवाद्यासुर पन्नगाः I

गुरुवक्त्र स्थिता विद्या गुरु भक्त्यातु लभ्यते II

trailokye sphuṭavaktāro, devādyāsura pannagāḥ I

guruvaktra sthitā vidyā guru bhaktyātu labhyate II

23. पवित्र शब्द "गुरु" में, ध्वनि 'गु' अंधेरे या अज्ञानता का प्रतीक है। ध्वनि 'रू' प्रतिभा या ज्ञान का प्रतीक है। अर्थात इसमें कोई संदेह नहीं है कि "गुरु" ध्वनि अज्ञानता के अंधेरे को नष्ट करके ज्ञान की आग को प्रज्वलित करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है।

गुकार स्त्वन्थकाराश्च रुकारस्तेज उच्यते I

अज्ञान ग्रासकं ब्रह्म, गुरुरेव न संशयः II

gukāra stvanthakārāśca rukārasteja ucyate I

ajñāna grāsakaṃ brahma, gurureva na saṃśayaḥ II

24. ध्वनि "गुरु" में पहली ध्वनि "गु" माया (अंधेरे /अज्ञानता) से सम्बंधित है। दूसरी ध्वनि "रू" (प्रकाश या ज्ञान) इस माया को नष्ट करने के लिए है।

गुकारः प्रथमोवर्णो मायादि गुणभासकः ।

रुकारो द्वितीयोब्रह्म, मायाभ्रांति विनाशकः ॥

gukāraḥ prathamovarṇo māyādi guṇabhāsakaḥ I

rukāro dvitīyobrahma, māyābhrāṃti vināśakaḥ II

25. यह स्पष्ट है कि "गुरु" का अर्थ है परम ब्रह्म। और स्वर्ग लोक के प्राणियों के लिए भी गुरु की इस दिव्य कृपा को प्राप्त करना बहुत कठिन है। यहां तक कि विभिन्न लोकों की जनजातियां (संस्कृत ग्रंथों के अनुसार हा और हू हू जनजाति) और जो कि "गंधर्वलोक" (दिव्य गायकों द्वारा शासित) हैं, वे भी पूजनीय गुरु की पूजा करते हैं।

एवं गुरु पदं श्रेष्टं, देवानामपि दुर्लभम् ।

हाहा हूहू गणश्चैव, गंधर्वैश्च प्रपूज्यते ॥

evaṃ guru padaṃ śreṣṭaṃ, devānāmapi durlabham I

hāhā hūhū gaṇaścaiva, gaṃdharvaiśca prapūjyate II

26 & 27. यह बहुत स्पष्ट और प्रामाणिक है कि एक आदरणीय गुरु से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। इसलिए, शिष्यों को विनम्रतापूर्वक गुरु को, वस्तुएं प्रदान करनी चाहिए; जैसे आसन, बिस्तर, कपड़े, गहने, वाहन, पसंदीदा खाद्य पदार्थ इत्यादि। केवल "गुरु" शब्द ही शाश्वत और सत्य है, बाकी सब कुछ क्षणिक है और विनाशवान है।

ध्रुवं तेषांच सर्वेषां नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।

आसनं शयनं वस्त्रं, भूषणं वाहनादिकम् ॥

साधकेन प्रदातव्यं, गुरु संतोषकारकम् ।

गुरोराराधनं कार्यं, स्वजीवित्वं निवेदयेत् ॥

dhruvaṃ teṣāṃca sarveṣāṃ nāsti tattvaṃ guroḥ param I

āsanaṃ śayanaṃ vastraṃ, bhūṣaṇaṃ vāhanādikam II

sādhakena pradātavyaṃ, guru saṃtoṣakārakam I

gurorārādhanaṃ kāryaṃ, svajīvitvaṃ nivedayet II

28. व्यक्ति को शुद्ध शरीर, मन और बुद्धि के साथ एक आदरणीय गुरु की पूजा करनी चाहिए। अहंकार और संदेह को छोड़कर, गुरु के सामने जमीन पर अपने पूरे शरीर के साथ साष्टांग प्रणाम करना चाहिए और सम्मान देना चाहिए।

कर्मणामनसावाचा नित्यं आराधयेत् गुरुम् ।

दीर्घदंडं नमस्कृत्य, निर्लज्जो गुरुसन्निधौ ॥

karmaṇāmanasāvācā nityaṃ ārādhayet gurum I

dīrghadaṃḍaṃ namaskṛtya, nirlajjo gurusannidhau II

29. व्यक्ति को अपने शरीर, अंगों, जीवन शक्ति, पत्नी, परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों सहित सभी कुछ एक आदरणीय गुरु की सेवा में समर्पित कर देना चाहिए।

शरीरमिंद्रियं प्राणं, सद्गुरुभ्यो निवेदयेत् ।

आत्मदारादिकं सर्वं, सद्गुरुभ्यो निवेदयेत् ॥

śarīramiṃdriyaṃ prāṇaṃ, sadgurubhyo nivedayet I

ātmadārādikaṃ sarvaṃ, sadgurubhyo nivedayet II

30. मानव शरीर में असंख्य सूक्ष्म कीड़े होते हैं। इसके अलावा, इसमें खराब महक और अवांछित मल और मूत्र आदि भी होते हैं। और यह वसा, रक्त, त्वचा, मांस आदि के साथ लिपटे हुए हैं, इसलिए, इस मानव शरीर के लिए लगाव को त्याग देना चाहिए।

कृमिकीट भस्मविष्ठा, दुर्गंधी मलमूत्रकम् ।

श्लेष्म रक्तं त्वचा मांसं, वांछयेन्न वरानने ॥

kṛmikīṭa bhasmaviṣṭhā, durgaṃdhī malamūtrakam I

śleṣma raktaṃ tvacā māṃsaṃ, vāṃchayenna varānane II

31. **उस आदरणीय गुरु के प्रति समर्पण, जो उस व्यक्ति को बचा सकता है कि जो पारिवारिक जीवन के भ्रम के पेड़ पर बैठा हुआ अज्ञानता के सागर में गिर गया हो।**

संसार वृक्षमारूढाः, पतन्तोनरकार्णवे।

येन चैवोद्धृताः सर्वे, तस्मैश्री गुरवे नमः॥

saṃsāra vṛkṣamārūḍhāḥ, patantonarakārṇave I

yena caivoddhṛtāḥ sarve, tasmaiśrī gurave namaḥ II

32. **आदरणीय गुरु वास्तव में भगवान ब्रह्मा या सृष्टि के स्वामी हैं! वह वास्तव में भगवान विष्णु या जीविका के स्वामी है! वह वास्तव में भगवान महेश्वर (शिव) या विनाश के देवता हैं! ऐसे आदरणीय गुरु को प्रणाम!**

गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुस्साक्षात् परंब्रह्म, तस्मैश्री गुरवे नमः॥

gururbrahma gururviṣṇu gururdevo maheśvaraḥ I

gurussākṣāt paraṃbrahma, tasmaiśrī gurave namaḥ II

33. जो इस सांसारिक अस्तित्व के रहस्यों को बताते हैं, जो शिष्य को संसार के महासागर से सुरक्षित पार कराने के लिए एक सेतु की भूमिका अदा करते हैं, जो वास्तव में शिष्य को प्रदान किए जाने वाले सभी ज्ञान के पिता हैं और जो वास्तव में भगवान शिव या सर्वशक्तिमान का अवतार हैं! ऐसे आदरणीय गुरु के चरणों में नमन!

हेतवे जगतामेव, संसारार्णव सेतवे I

प्रभवे सर्व विद्यानां, शंभवे गुरवे नमः II

hetave jagatāmeva, saṃsārārṇava setave I

prabhave sarva vidyānāṃ, śaṃbhave gurave namaḥ II

34. उस आदरणीय गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा प्रकट करता हूँ! जो आँखों में अंजन (एक प्रकार का काजल) लगाकर लोगों को अज्ञानता के अंधेरों से दूर करके दिव्य दृष्टि प्रदान करते हैं!

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया I

चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः II

ajñāna timirāndhasya jñānāṃjana śalākayā I

cakṣurunmīlitaṃ yena, tasmai śrī gurave namaḥ II

35. हे, आदरणीय गुरु! वास्तव में आप मेरे लिए माता-पिता हैं,

मेरे लिए रिश्तेदार हैं और मेरे सभी देवी-देवता हैं! जो कि माया को दूर करके पवित्र ज्ञान को प्रदान करा सकते हैं।

त्वं पिता त्वंचमे माता, त्वं बंधुस्त्वं च देवता।

संसार प्रतिबोधार्थं, तस्मैश्री गुरवे नमः॥

tvaṃ pitā tvaṃcame mātā, tvaṃ baṃdhustvaṃ ca devatā I

saṃsāra pratibodhārthaṃ, tasmaiśrī gurave namaḥ II

36. उस आदरणीय गुरु के प्रति आभार, जो कि पूर्णता में कार्य करते हैं, जिस पर सांसारिक अस्तित्व निर्भर करता है और जिसकी कृपा से ही यह संसार भोग भोगता है!

यत्सत्येन जगत् सत्यं, यत् प्रकाशेन भाति तत्।

यदानन्देन नन्दन्ति, तस्मैश्री गुरवे नमः॥

yatsatyena jagat satyaṃ, yat prakāśena bhāti tat I

yadānandena nandanti, tasmaiśrī gurave namaḥ II

37. उस आदरणीय गुरु को नमन जिनके अस्तित्व के कारण इस संसार को मानव जाति द्वारा अनुभव किया जाता है, जिनके कारण सूर्य प्रकाशित होता है और जिनकी प्रकृति (प्रेम और करुणा) के कारण हम भी अपने बच्चों के प्रति अपने प्यार का प्रदर्शन करते हैं। (अर्थात मनुष्य द्वारा प्रेम की अभिव्यक्ति इस

प्रकृति में दिव्य है।)

यस्यस्थित्या सत्यमिदं, यद् भति भानुरूपतः ।

प्रियं पुत्रादि यत् प्रीत्या, तस्मैश्री गुरवे नमः ॥

yasyasthityā satyamidaṃ, yad bhati bhānurūpataḥ I

priyaṃ putrādi yat prītyā, tasmaiśrī gurave namaḥ II

38. उस आदरणीय गुरु के प्रति आभार जिनके कारण यह सांसारिक अस्तित्व गतिशील है और सदा बदलता हुआ प्रतीत होता है। मानव मन भी इसी गतिशील और सदा परिवर्तनशील होने के गुण को प्राप्त करता है| और जिसके कारण जागने, सपने देखने और सोने की तीन अवस्थाएँ हैं। उसके कारण ही मानव मन के द्वारा गतिशील होने और प्रकृति में परिवर्तन होने का भी अनुभव किया जा रहा है!

येन चेतयिते हिदं, चित्तं चेतयते न यम् ।

जाग्रत् स्वप्न सुषुत्यादि, तस्मैश्री गुरवे नमः ॥

yena cetayite hidaṃ, cittaṃ cetayate na yam I

jāgrat svapna suṣuptyādi, tasmaiśrī gurave namaḥ II

39. उस आदरणीय गुरु के प्रति आभार, जिनकी शिक्षाओं के कारण यह संसार अब (आत्म-साक्षात्कार के बाद) अद्वैत रूप में

अनुभव किया जाता है और मेरे साथ एकीकृत हुआ लगता है!

यस्य ज्ञानादिदं विश्वं न दृश्यं भिन्न भेदतः I

सदेक रूप रूपाय, तस्मैश्री गुरवे नमः II

yasya jñānādidaṃ viśvaṃ na dṛśyaṃ bhinna bhedataḥ I

sadeka rūpa rūpāya, tasmaiśrī gurave namaḥ II

40. उस पूज्य गुरु के प्रति श्रद्धा, जिनकी पवित्र शिक्षाओं के कारण, इस सृष्टि के प्रति विरक्ति उत्पन्न हुई है और इसके परिणामस्वरूप यह अद्वैत दिखाई देता है और मेरे स्वयं के साथ एकरूप हुआ जाता है।

यस्यामतं तस्यमतं, मतं यस्य न वेदं सः I

अनन्य भाव भावाय, तस्मैश्री गुरवे नमः II

yasyāmataṃ tasyamataṃ, mataṃ yasya na vedaṃ saḥ I

ananya bhāva bhāvāya, tasmaiśrī gurave namaḥ II

41. उस आदरणीय गुरु के प्रति आभार जो इस प्रकट ब्रह्मांड का कारण है और साथ ही साथ इस प्रकट ब्रह्मांड के रूप में ज्योतिपुंज है (वह कारण रूप में भी है और प्रकट रूप में भी वही है)।

यस्य कारणरूपस्य, कार्यरूपेण भातियत् I

कार्यकारण रूपाय, तस्मैश्री गुरवे नमः ॥

yasya kāraṇarūpasya, kāryarūpeṇa bhātiyat I

kāryakāraṇa rūpāya, tasmaiśrī gurave namaḥ II

42. उस वंदनीय गुरु के प्रति आभार जो इस ब्रह्मांड का कारण और प्रकट रूप है। उन्होंने उस पवित्र ज्ञान को भी प्रदान किया है जो इस संसार में अद्वैतवाद को सिखाता है और दिखाता है। हालांकि यह रूप में द्वैतवादी प्रतीत होता है। (इस दुनिया में हर चीज में एक अंतर्निहित एकता है, हालांकि यह असंख्य रूपों से मिलकर बनी हुई प्रतीत होती है)।

नानारूप मिदं सर्वं न केनाप्यस्ति भिन्नता।

कार्यकारणता चैव तस्मैश्री गुरवे नमः ॥

nānārūpa midaṃ sarvaṃ na kenāpyasti bhinnatā I

kāryakāraṇatā caiva tasmaiśrī gurave namaḥ II

43. उस आदरणीय गुरु के प्रति श्रद्धा, जिनके चरण कमल की जोड़ी द्वैतवाद की धारणा (इस प्रकट ब्रह्मांड के संबंध में) को दूर कर सकती है।

यदंघ्रि कमल द्वंद्वं, द्वन्द्वताप निवारकम्।

तारकं सर्वदाऽऽपद्भ्यः श्रीगुरुं प्रणमाम्यहम् ॥

yadaṃghri kamala dvaṃdvaṃ, dvandvatāpa nivārakam I

tārakaṃ sarvadā"padbhyaḥ śrīguruṃ praṇamāmyaham II

44. एक गुरु अपने शिष्यों की रक्षा कर सकता है, भले ही भगवान शिव (संहारक के रूप में भगवान) उन शिष्यों से नाराज हों। हालाँकि, भगवान शिव भी उन शिष्यों को गुरु के क्रोध से नहीं बचा सकते। इसलिए पूर्ण सामर्थ्य से उस वंदनीय गुरु की शरण लें!

शिवे कृद्धे गुरुस्त्राता गुरौ कृद्धे शिवो न हि।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्रीगुरुं शरणं व्रजेत् ॥

śive kṛddhe gurustrātā gurau kṛddhe śivo na hi I

tasmāt sarvaprayatnena śrīguruṃ śaraṇaṃ vrajet II

45. गुरु के उन वंदनीय चरण कमल के प्रति श्रद्धा, जो वाणी, बुद्धि और मन की शक्ति को प्रकट करते हैं; जो सफेद और लाल रंग के कारण भिन्न होते हैं और जो शिव और शक्ति के रूप में प्रकाशित हैं!

वंदे गुरुपद द्वंद्वं वाङ्मनश्चित्त गोचरम्।

श्वेत रक्तप्रभा भिन्नं, शिवशक्त्यात्मकं परम् ॥

vaṃde gurupada dvaṃdvaṃ vāṅmanaścitta gocaram I

śveta raktaprabhā bhinnaṃ, śivaśaktyātmakaṃ param II

46. दो अक्षर वाली ध्वनि “गुरु" में, ध्वनि "गु" तीन गुणों (जड़ता, गतिशीलता और सद्भाव) से परे होने के लिए जुड़ी है और ध्वनि "रू" को निराकार होने के लिए पहचाना जाता है। जो कोई भी इस सत्य की शिक्षा दे सकता है वही आदरणीय गुरु के रूप में प्रतिष्ठित है।

गुकारं च गुणातीतं, रुकारं रूप वर्जितं l

गुणातीत स्वरूपं च, यो दध्यात् स गुरुः स्मृतः ll

gukāraṃ ca guṇātītaṃ, rukāraṃ rūpa varjitaṃ I

guṇātīta svarūpaṃ ca, yo dadhyāt sa guruḥ smṛtaḥ II

47. हे पार्वती! आदरणीय गुरु वास्तव में तीन नेत्रों के बिना भगवान शिव हैं और जो हर चीज के साक्षी हैं; बिना चार भुजाओं वाले भगवान विष्णु; और चार मुखों के बिना भगवान ब्रह्मा। इस प्रकार, आदरणीय गुरु त्रिमूर्ति (उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय तीन के स्वामी) के रूप में है |

अ - त्रिनेत्र सर्वसाक्षी - अ – चतुर्भाहुरच्युतः l

अ - चतुर्वदनो ब्रह्म, श्री गुरु कथित प्रिये ll

a - trinetra sarvasākṣī - a – caturbhāhuracyutaḥ I

a - caturvadano brahma, śrī guru kathita priye II

48. हमें अपने समग्र विकास के लिए अपने हाथों से आदरणीय गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने की आवश्यकता है। हम आदरणीय गुरु के आशीर्वाद से जन्म और मृत्यु के इस क्षणभंगुर जीवन से खुद को मुक्त कर सकते हैं।

अयं मयांजलिर्बद्धो, दया सागरवृद्धये ।

यदनुग्रहतो जन्तुश्चित्र संसार मुक्तिभाक् ॥

ayaṃ mayāṃjalirbaddho, dayā sāgaravṛddhaye I

yadanugrahato jantuścitra saṃsāra muktibhāk II

49. प्रखर बुद्धि (विवेक के कार्य से) के माध्यम से आदरणीय गुरु के सर्वोच्च और अमरता के गुण को अनुभव करना संभव है। जैसे कि एक अँधा व्यक्ति सूर्योदय नहीं देख सकता है; ठीक उसी प्रकार, ऐसा व्यक्ति जो बिना बुद्धि वाला हैं और धार्मिक योग्यता से रहित हैं, वे आदरणीय गुरु के सर्वोच्च और अमर रूप को नहीं जान सकते। (हालांकि, मनुष्य में प्रखर बुद्धि का होना भी केवल एक आदरणीय गुरु की कृपा से ही संभव है।)

श्रीगुरोः परमं रूपम्, विवेक चक्षुषोऽमृतम् ।

मन्द भाग्या न पश्यन्ति अन्धाः सूर्योदयं यथा ॥

śrīguroḥ paramaṃ rūpam, viveka cakṣuṣo'mṛtam I

manda bhāgyā na paśyanti andhāḥ sūryodayaṃ yathā II

50. "श्री" का अर्थ शक्ति है। नाथ का अर्थ पति अथवा भगवन है। श्रीनाथ का अर्थ श्री के पति अर्थात भगवान विष्णु है। हर दिन उस दिशा में श्रद्धा सुमन अर्पित करना चाहिए जिस ओर गुरु के चरण कमल प्रकाशित होते हैं (भगवान विष्णु के रूप में)। हे पार्वती! विश्वास और भक्ति के साथ अर्पित किये गए श्रद्धा सुमन हमारे विचारों को पवित्र करेंगे।

श्रीनाथ चरण द्वंद्वं यस्यां दिशे विराजिते ।

तस्यै दिशे नमस्कुर्याद्, भक्त्या प्रतिदिनं प्रिये ॥

śrīnātha caraṇa dvaṃdvaṃ yasyāṃ diśe virājite I

tasyai diśe namaskuryād, bhaktyā pratidinaṃ priye II

51. जिस दिशा में आदरणीय भगवान या गुरु या सम्राट एक साक्षी के रूप में सृजन और विनाश के खेल के बारे में जागरूकता के साथ रहते हैं, उस दिशा में विशेष मंत्र और फूलों के साथ नियमित रूप से श्रद्धा सुमन अर्पित करने की आवश्यकता होती है।

तस्यै दिशे सततमंजलिरेष आर्ये

प्रक्षिप्यते, मुखरितो मधुपैर्बुधैश्च ।

जागर्ति यत्र भगवान् गुरु चक्रवर्ती

विश्वोदय प्रळय नाटक नित्यसाक्षी ॥

tasyai diśe satatamaṃjalireṣa ārye

prakṣipyate, mukharito madhupairbudhaiśca I

jāgarti yatra bhagavān guru cakravartī

viśvodaya pra l̲ aya nāṭaka nityasākṣī II

52. आदरणीय गुरुओं की आकाशगंगा को नमन, जिसमें भगवान विष्णु और अन्य दो प्रभुओं अर्थात त्रिमूर्ति, भगवान गणपति, शक्ति के तीन रूपों (सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय) का आसन, भैरव के आठ रूप, भगवान शिव, सिद्धों की सभा (योग के आराध्य), गुरु के दो चरण कमल, चौंसठ योगिनियाँ, और सभी मंत्रों की माला " अ" ध्वनि से शुरू होकर "क्ष" (50 अक्षरों की संस्कृत वर्णमाला) तक सभी संयुक्त हैं।

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्

सिद्धौघं बटुक त्रयं पादयुगं दूतीक्रमं मंडलं ।

वीरान् द्वश्यष्ठ चतुष्कषष्ठि नवकं वीरावळी पंचकं

श्रीमन्मालिनी मंत्रराज सहितं वंदे गुरोर्मंडलम् ॥

śrīnāthādi gurutrayaṃ gaṇapatiṃ pīṭhatrayaṃ bhairavam

siddhaughaṃ baṭuka trayaṃ pādayugaṃ dūtīkramaṃ maṃḍalaṃ I

vīrān dvaśyaṣṭha catuṣkaṣaṣṭhi navakaṃ vīrāva l̲ ī paṃcakaṃ

śrīmanmālinī maṃtrarāja sahitaṃ vaṃde gurormaṃḍalam II

53. प्राणायाम करने में प्रयुक्त विभिन्न विधियों को हठ योग (फेफड़ों को भरने के बाद आंतरिक रूप से सांस को रोकना, फेफड़ों को खाली करने के बाद सांस को रोकना, "केवल कुंभक", "भस्त्रिका", "शीतली" "भ्रामरी" आदि) कहा जाता है। यद्यपि प्राणायाम का अभ्यास करना संभव है, तथापि इसे बहुत लंबे समय तक करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, कई तरीके विकसित किए गए हैं। हालांकि, जीवनी शक्ति की सूक्ष्म वायु को रोकने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियां दुर्भाग्य की जनक हैं। इसके अलावा, उनका अभ्यास करना भी अत्यंत कठिन हैं। व्यवहार में किसी भी तरह की अनियमितता या लापरवाही दर्दनाक बीमारियों को जन्म देती है (हालांकि इनका सिद्धों की देखरेख में अभ्यास करना सुरक्षित है)। प्राणायाम के अनियमित या अस्त व्यस्त अभ्यास से रोग और हानिकारक बीमारियाँ हो जाती हैं। इसलिए, यदि अभ्यासी बुद्धिमान है तो वह हमेशा आदरणीय गुरु की सेवा करते हैं, और वे बहुत आसान और प्राकृतिक तरीके से परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

अभ्यस्तैः सकलैः सुदीर्घमनिलैर्व्याधि प्रदैर्दुष्करैः

प्राणायाम शतैरनेक करणैः दुःखात्मकैर्दुर्जयैः ।

यस्मिन्नभ्युदिते विनश्यति बलीवायुः स्वयं तत् क्षणात्

प्राप्तुं तत्सहजं स्वभावमनिशं सेवध्वमेकं गुरुम् ॥

abhyastaiḥ sakalaiḥ sudīrghamanilairvyādhi pradairduṣkaraiḥ

prāṇāyāma śatairaneka karaṇaiḥ duḥkhātmakairdurjayaiḥ I

yasminnabhyudite vinaśyati balīvāyuḥ svayaṃ tat kṣaṇāt

prāptuṃ tatsahajaṃ svabhāvamaniśaṃ sevadhvamekaṃ gurum II

54. आदरणीय गुरु के रूप को याद करना भगवान शिव (विनाश के भगवान) को याद करना है। आदरणीय गुरु के नाम का गायन स्वाभाविक रूप से परम ईश्वर (शिव) के नाम का गायन है।

स्वदेशिकस्यैव शरीरचिंतनम्

भवेदनन्तस्य शिवस्य चिंतनम् ।

स्वदेशिकस्यैव च नामकीर्तनम्

भवेदनन्तस्य शिवस्य कीर्तनम् ॥

svadeśikasyaiva śarīraciṃtanam

bhavedanantasya śivasya ciṃtanam I

svadeśikasyaiva ca nāmakīrtanam

bhavedanantasya śivasya kīrtanam II

55. आदरणीय गुरु के चरण कमलों की धूल का एक दाना उस पुल के बराबर है जो किसी व्यक्ति को इस पार-प्रवासी जीवन के सागर को पार कराने के लिए पर्याप्त है। इसलिए सदैव वंदनीय

गुरु की आराधना करें!

यत्पादरेणु कणिका कापि संसार वारिधेः I

सेतुबंधायते नाथं देशिकं तमुपास्महे II

yatpādareṇu kaṇikā kāpi saṃsāra vāridheḥ I

setubaṃdhāyate nāthaṃ deśikaṃ tamupāsmahe II

56. हम प्रार्थना करते हैं कि आदरणीय गुरु हमें हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करने में मदद करें क्योंकि यह उनकी कृपा के कारण ही है कि, हम खुद को अज्ञानता के अंधेरे से मुक्त कर सकते हैं।

यस्मादनुग्रहं लब्ध्वा महदज्ञान मुत्सृजेत् I

तस्मै श्री देशिकेन्द्राय, नमाश्चाभीष्ठ सिद्धये II

yasmādanugrahaṃ labdhvā mahadajñāna mutsṛjet I

tasmai śrī deśikendrāya, namāścābhīṣṭha siddhaye II

57. सांसारिक आकर्षण की जंगली उग्र आग को केवल आदरणीय गुरु के चरण कमलों द्वारा रोका जा सकता है। अतः गुरु के उन चरणों का ध्यान करें। वे सफेद कमल के ऊपर स्थित होते हैं जो ब्रह्म रंध्र के चंद्र अर्धचन्द्राकार क्षेत्र के केंद्र में होता है (जो सिर के मुकुट के ऊपर स्थित होता है और जो ब्रह्म का प्रवेश द्वार

है)।

पादाब्जं सर्व संसार, दावानल विनाशकम् ।

ब्रह्मरन्द्रे सिताम्भोज, मध्यस्थं चन्द्र मंडले ॥

pādābjaṃ sarva saṃsāra, dāvānala vināśakam I

brahmarandre sitāmbhoja, madhyasthaṃ candra maṃḍale II

58. हजार पंखुड़ियों वाले कमल (सिर के मुकुट के शीर्ष पर स्थित) के क्षेत्र में "आ", "का" और "था" तीन ध्वनि निकायों का प्रतिनिधित्व करने वाली तीन पंखुड़ियों के साथ एक कमल का फूल होता है। हंस के बगल में एक त्रिभुज भी है, दोनों इस तीन पंखुड़ियों वाले कमल के ऊपर स्थित हैं। त्रिकोण के केंद्र में बैठे हुए गुरु का ध्यान करें।

अकथादि त्रिरेखाब्जे, सहस्रदळ मंडले ।

हंस पार्श्व त्रिकोणे च स्मरे त्तन्मध्यगं गुरुम् ॥

akathādi trirekhābje, sahasradaḻa maṃḍale I

haṃsa pārśva trikoṇe ca smare ttanmadhyagaṃ gurum II

59. गुरु की दिव्य झलक हमेशा मुझ पर हो सकती है! वह नज़र सारी दुनिया का निर्माण करती है और सभी वेदों के सार को समझने की इच्छाशक्ति को मजबूत करती है। यह सांसारिक धन

के प्रति आकर्षण को कम करता है और इसे आगे बढ़ाने की निरर्थकता सिखाता है। जिससे यह भक्त की सभी कमियों को नष्ट कर देता है।

सकल भुवन सृष्टिः कल्पिताऽशेष पुष्टिः

निखिल निगम दृष्टिः संपदां व्यर्धदृष्टिः ।

अवगुण परिमार्ट्र्षि? स्तत्पदार्धैक दृष्टिः

भवगुण परमेष्टिर्मोक्ष मार्गैक दृष्टिः ॥

sakala bhuvana sṛṣṭiḥ kalpitā'śeṣa puṣṭiḥ

nikhila nigama dṛṣṭiḥ saṃpadāṃ vyardhadṛṣṭiḥ I

avaguṇa parimārṭṣi? statpadārdhaika dṛṣṭiḥ

bhavaguṇa parameṣṭirmokṣa mārgaika dṛṣṭiḥ II

60. गुरु की दृष्टि वह शक्ति है जिससे सम्पूर्ण संसार नियमबद्ध हैं। और वही दृष्टि इस नियमबद्ध संसार पर करुणा की बौछार कर रही है। गुरु की दृष्टि में सृजन, विकास और विघटन की तीनों घटनाएं शामिल हैं। गुरु की दृष्टि समय (भूत, वर्तमान और भविष्य) की जनक है और इसी दृष्टि से ब्राह्मण को तीन गुणों (परम सत्य, परम ज्ञान, और परम आनंद) की प्राप्ति होती है। गुरु की दिव्य दृष्टि मुझ पर हमेशा बनी रहे!

सकल भुवन रंग स्थापना स्तम्भयष्टि

सकरुण रसवृष्टि स्तत्वमाला समष्टिः ।

सकल समयसृष्टिः सच्चिदानंद दृष्टिः

रिवसतु मयि नित्यं श्रीगुरोर्दिव्य दृष्टिः ॥

sakala bhuvana raṃga sthāpanā stambhayaṣṭi

sakaruṇa rasavṛṣṭi statvamālā samaṣṭiḥ I

sakala samayasṛṣṭiḥ saccidānaṃda dṛṣṭiḥ

rivasatu mayi nityaṃ śrīgurordivya dṛṣṭiḥ II

61. गुरु द्वारा दिया गया मंत्र या शब्द "गुरु" ही सभी मंत्रों का राजा है। यह आग में शुद्ध सोने के समान है। यह हमें मृत्यु से दिन और रात सभी दिशाओं से बचाता है।

अग्निशुद्ध समंतात् ज्वाला परिचिकाधिया ।

मंत्रराजमिमं मन्येऽहर्निशं पातु मृत्युतः ॥

agniśuddha samaṃtāt jvālā paricikādhiyā I

maṃtrarājamimaṃ manye'harniśaṃ pātu mṛtyutaḥ II

62. गुरु "तत्व" या "गुरु" शब्द का मूल, अथवा गुरुमंत्र सदा गतिशील होने के साथ-साथ स्थिर भी है। यह "तत्व" आस-पास भी और दूर-दूर तक भी है और यह अंदर और बाहर दोनों ओर व्याप्त है। इसे सीमित बुद्धि से कभी वर्णित नहीं किया जा सकता है।

तदेजति तन्नैजति, तद् दूरे तत् समीपके I

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्य बाह्यतः II

tadejati tannaijati, tad dūre tat samīpake I

tadantarasya sarvasya tadu sarvasya bāhyataḥ II

63 – 65. मैं ही गुरु चेतना हूँ, जो इस प्रकार है: मेरा कोई जन्म और मृत्यु नहीं है, मैं चिरनूतन/ चिरयुवा हूँ, मैं शुरुआत और अंत के बिना हूँ, मैं चेतना हूँ, मैं आनंद हूँ, मैं सबसे छोटा हूँ, मैं सबसे बड़ा हूं, मेरा कोई पूर्व-इतिहास नहीं है (मैं हमेशा अस्तित्व में रहा हूं), मैं शाश्वत हूं, मैं स्वयं प्रकाशित हूं, मैं बिना तनाव और लालसा के हूं, मैं पूरे अंतरिक्ष में व्याप्त हूं, मैं सदैव आनंदित हूं , मैं ध्रुवतारा (उत्तरी ध्रुवीय सितारा) हूं, मैं अभेद्य हूं, मैं ज्ञान प्राप्त करने के चार मानक या तरीके या तो मौखिक परंपरा से या प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से या इतिहास के पढ़ने के द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं।

अजोऽहमजरोहं(ऽ)च अनादिनिधनः स्वयम् I

अविकारश्चिदानंद, अणीयान् महतो महन् II

अपूर्वाणां परं नित्यं स्वयं ज्योतिर्निरामयम् I

विरजं परमाकाशं ध्रुवमानंदमव्ययम् II

शृतिः प्रत्यक्षमैतिह्य – मनुमानश्चतुष्टयम् I

यस्य चात्मतपोवेद, देशिकं च सदा स्मरेत् ॥

ajo'hamajarohaṃ(')ca anādinidhanaḥ svayam I

avikāraścidānaṃda, aṇīyān mahato mahan II

apūrvāṇāṃ paraṃ nityaṃ svayaṃ jyotirnirāmayam I

virajaṃ paramākāśaṃ dhruvamānaṃdamavyayam II

śṛtiḥ pratyakṣamaitihya – manumānaścatuṣṭayam I

yasya cātmatapoveda, deśikaṃ ca sadā smaret II

66. हे महान ज्ञानी! (देवी पार्वती!) मैं देख रहा हूं कि आपका मन एक महान पवित्रता और महान आभा को प्राप्त हो रहा है। इसलिए, मैं आपको बताऊंगा कि गुरु की पूजा कैसे करें।

मननं यद्भवं कार्यं तद्वदामि महामते ।

साधुत्वं च मया दृष्ट्वा त्वयि तिष्ठति सांप्रतम् ॥

mananaṃ yadbhavaṃ kāryaṃ tadvadāmi mahāmate I

sādhutvaṃ ca mayā dṛṣṭvā tvayi tiṣṭhati sāṃpratam II

67. आदरणीय गुरु को प्रणाम -जिसकी कृपा से दैवीय का ज्ञान प्रकट होता है जो संपूर्ण पृथ्वी और सभी प्राणियों को प्रभावित करता है।

अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

akhaṃḍamaṃḍalākāraṃ vyāptaṃ yena carācaram I

tatpadaṃ darśitaṃ yena, tasmai śrī gurave namaḥ II

68. आदरणीय गुरु को प्रणाम जिनके चरण कमल सर्वोच्च शास्त्र से, ज्ञान के महान कथनों के रूप में, शानदार रत्नों की तरह आभावान हैं। आदरणीय गुरु को प्रणाम, जो सूर्य के रूप में आभावान हैं, उनसे उच्चतम शास्त्रों के ज्ञान के कमल के फूल खिल रहे हैं।

सर्वशृति शिरोरत्न विराजित पदाम्बुजः ।

वेदान्ताम्बुज सूर्यो यः स्तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

sarvaśṛti śiroratna virājita padāmbujaḥ I

vedāntāmbuja sūryo yaḥ stasmai śrī gurave namaḥ II

69. आदरणीय गुरु को नमन, जिनके स्मरण करने से पवित्र ज्ञान सहज रूप से उत्पन्न होता है, और जिन गुरु के स्मरण मात्र से ही सभी प्रकार के धन की प्राप्ति हो जाती है।

यस्यस्मरण मात्रेण, ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम् ।

य एव सर्वसंप्राप्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

yasyasmaraṇa mātreṇa, jñānamutpadyate svayam I

ya eva sarvasaṃprāpti tasmai śrī gurave namaḥ II

70. **गुरु के "तत्व" या गुरु के वंदनीय गुण को प्रणाम जो शुद्ध चेतना है, शाश्वत है, पूर्ण शांति है, अंतरिक्ष की सीमाओं से परे है। जो निर्दोष और मौलिक ध्वनि "ओम" के तीन रूपों (जिसके तीन भाग हैं जैसे नाद, बिंदु और काल) से परे है।**

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम् ।

नादबिन्दु कळातीतं, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

caitanyaṃ śāśvataṃ śāntaṃ vyomātītaṃ niraṃjanam I

nādabindu kaḻātītaṃ, tasmai śrī gurave namaḥ II

71. **आदरणीय गुरु को प्रणाम, जो परिवर्तनशील है, या जो अपरिवर्तनशील हैं, इसी प्रकार वह सब जो चेतन है या जो निर्जीव है, उन सभी में व्याप्त हैं।**

स्थावरं जंगमंचैव तधाचैव चराचरम् ।

व्याप्तं येन जगत् सर्वं, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

sthāvaraṃ jaṃgamaṃcaiva tadhācaiva carācaram I

vyāptaṃ yena jagat sarvaṃ, tasmai śrī gurave namaḥ II

72. आदरणीय गुरु को प्रणाम, जो ज्ञान की शक्ति से सुशोभित छः "तत्वों" की माला पहने हुए है (या 36 गुण जिसके द्वारा इस ब्रह्मांड को सांख्य दर्शन के अनुसार बनाया गया है। भारतीय दर्शन की छह प्रणालियों में से एक है)। और जो मोक्ष (मुक्ति या आत्मसाक्षात्कार) और भौतिक समृद्धि दोनों को प्राप्त कराते हैं।

ज्ञानशक्ति समारूढ स्तत्व मालाविभूषितः ।

भुक्तिमुक्ति प्रदाताय, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

jñānaśakti samārūḍha statva mālāvibhūṣitaḥ I

bhuktimukti pradātāya, tasmai śrī gurave namaḥ II

73. आदरणीय गुरु को प्रणाम जो अपने आंतरिक ज्ञान (या आत्म-साक्षात्कार) की शक्ति से, अनगिनत जीवन में संचित कर्मों (शिष्य द्वारा) के विशालकाय पर्वत को जला सकते हैं।

अनेक जन्म संप्राप्त सर्वकर्म विदाहिने ।

स्वात्म ज्ञान प्रभावेण, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

aneka janma saṃprāpta sarvakarma vidāhine I

svātma jñāna prabhāveṇa, tasmai śrī gurave namaḥ II

74. गुरु "तत्व" या गुरु के सार से बड़ा कुछ भी नहीं है। गुरु की सेवा करने के कार्य से बढ़कर आत्म-अनुशासन (ध्यान या तप)

का कोई दूसरा मार्ग नहीं है। गुरु चेतना के ज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। ऐसे आदरणीय गुरु को प्रणाम, जो उन सभी पदार्थों का मूल है जिनके द्वारा इस संसार कि रचना हुई है।

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।

तत्त्व ज्ञानात् परं नास्ति, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

na guroradhikaṃ tattvaṃ na guroradhikaṃ tapaḥ I

tattva jñānāt paraṃ nāsti, tasmai śrī gurave namaḥ II

75. मेरे गुरु ब्रह्मांड के भगवान हैं। मेरे गुरु तीनों लोकों (प्रकट संसार के तीन स्तर अर्थात स्वर्ग लोक, भू लोक और पाताल लोक) के गुरु है। मेरा "स्व" सभी प्राणियों का "स्व" है। मन के इस ढाँचे के साथ, मैं अपने आदरणीय गुरु को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो, मद्गुरुस्त्रिजगद्गुरुः ।

ममात्मा सर्वभूतात्मा, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

mannāthaḥ śrījagannātho, madgurustrijagadguruḥ I

mamātmā sarvabhūtātmā, tasmai śrī gurave namaḥ II

76. मूल रूप से गुरु की छवि कि कल्पना करें और ध्यान करें। गुरु के चरण कमल पूजनीय हैं। किसी भी मंत्र का मूल मेरे गुरु

का वचन है। मोक्ष भी (ब्रह्म या सर्वशक्तिमान की मुक्ति या आत्म-ज्ञान या ज्ञान प्राप्त करने के लिए) गुरु की कृपा है।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।

मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृप ।।

dhyānamūlaṃ gurormūrtiḥ pūjāmūlaṃ guroḥ padam I

maṃtramūlaṃ gurorvākyaṃ, mokṣamūlaṃ guroḥ kṛpa II

77. गुरु की कोई शुरुआत नहीं है (हमेशा सदा के लिए विद्यमान है) लेकिन वे अन्य सभी प्राणियों के लिए स्रोत या मूल हैं। वह वास्तव में सबसे बडे देवता है और उनसे बड़ा कोई और नहीं है। ऐसे आदरणीय गुरु को प्रणाम!

गुरुरादिरानादिश्च गुरुपरम दैवतम् ।

गुरोः परतरं नास्ति, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

gururādirānādiśca guruparama daivatam I

guroḥ parataraṃ nāsti, tasmai śrī gurave namaḥ II

78. एक बूंद पानी (जो गुरु के चरणों को धोने के लिए उपयोग किया गया हो) का एक हज़ारवाँ हिस्सा, इतना पवित्र है कि यह सभी सात समुद्रों या पवित्र झरनों में पवित्र स्नान करने के बराबर है।

सप्तसागर पर्यन्तं, तीर्थस्नानादिकं फलम् I

गुरोरंघ्रिपयोबिन्दु, सहस्रांशेन दुर्लभम् II

saptasāgara paryantaṃ, tīrthasnānādikaṃ phalam I

guroraṃghripayobindu, sahasrāṃśena durlabham II

79. यदि भगवान विष्णु या भगवान शिव किसी से भी नाराज हैं, तो भी गुरु भक्त की रक्षा कर सकते हैं। हालाँकि, यदि किसी का गुरु नाराज़ है तो कोई भी व्यक्ति उस व्यक्ति को नहीं बचा सकता है। इसलिए व्यक्ति को अपने गुरु के चरणों में पूरी शक्ति से शरण लेनी चाहिए।

हरौरुष्टे गुरुस्त्राता गुरोरुष्टेन कश्चन I

तस्मात् सर्व प्रयत्नेन श्रीगुरुं शरणं व्रजेत् II

harauruṣṭe gurustrātā guroruṣṭena kaścana I

tasmāt sarva prayatnena śrīguruṃ śaraṇaṃ vrajet II

80. यह पूरा ब्रह्मांड भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव की शक्ति से व्याप्त है (देवताओं की त्रिमूर्ति क्रमशः सृजन, जीविका और विनाश की शक्ति रखती है)। ऐसा ब्रह्मांड और कुछ नहीं बल्कि गुरु का स्वरूप "तत्व" या "गुरु का सार" है। इसलिए, आदरणीय गुरु से बेहतर या उच्चतर और कुछ नहीं है। अत: सदैव वंदनीय गुरु की पूजा करनी चाहिए।

गुरुरेव जगत् सर्वं, ब्रह्मविष्णु शिवात्मकम् I

गुरोः परतरं नास्तितस्मात् संपूज येद् गुरुम् II

gurureva jagat sarvaṃ, brahmaviṣṇu śivātmakam I

guroḥ parataraṃ nāstitasmāt saṃpūja yed gurum II

81. गुरु के प्रति समर्पण रखने से सभी ज्ञान के साथ-साथ सभी विज्ञानों का ज्ञान प्राप्त होता है। आदरणीय गुरु से बढ़कर और कुछ नहीं है। इसलिए, जो लोग भक्ति के मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए आदरणीय गुरु आदर्श चिंतन है।

ज्ञानं विज्ञान सहितं, लभ्यते गुरुभक्तितः I

गुरोः परतरंनास्ति, ध्येयोऽसौ गुरुमार्गिभिः II

jñānaṃ vijñāna sahitaṃ, labhyate gurubhaktitaḥ I

guroḥ parataraṃnāsti, dhyeyo'sau gurumārgibhiḥ II

82. गुरु "तत्व" से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। यहां तक कि पवित्र शास्त्र का सम्पूर्ण विज्ञान भी यह बताने में असमर्थ है कि गुरु "तत्व" क्या है, जो कि 'यह नहीं', 'यह नहीं' की घोषणा करके उसके बाद चुप हो जाता है। (इसका अर्थ है कि शास्त्र केवल यह समझा सकता है कि गुरु “तत्व” क्या नहीं है। वह "यह नहीं" वाक्यांश की ही बार-बार घोषणा कर सकता है। गुरु "तत्व" वास्तव में क्या है? यह प्रकट करना पवित्र शास्त्रों की क्षमता से

परे है क्योंकि इसे सांसारिक भाषाओं में नहीं समझाया जा सकता है।) इसलिए, व्यक्ति को हमेशा मन और वाणी दोनों के साथ आदरणीय गुरु की पूजा करनी चाहिए।

यस्मात् परतरं नास्ति, नेतिनेतीति वै शृतिः ।

मनसा वचसा चैव, नित्यमाराधयेद् गुरुम् ॥

yasmāt parataraṃ nāsti, netinetīti vai śṛtiḥ I

manasā vacasā caiva, nityamārādhayed gurum II

83. विशुद्ध रूप से गुरु "तत्व" के कारण ही भगवान ब्रह्मा (निर्माता), भगवान विष्णु (पालनकर्ता), और भगवान सदाशिव (विध्वंसक) क्रमशः ब्रह्मांड के निर्माण, निर्वाह और विनाश के अपने कर्तव्यों को निभाने में सक्षम हैं।

गुरोः कृपाप्रसादेन, ब्रह्मविष्णु सदाशिवाः ।

समर्थाः प्रभवादौ च, कैवल्यं गुरुसेवया ॥

guroḥ kṛpāprasādena, brahmaviṣṇu sadāśivāḥ I

samarthāḥ prabhavādau ca, kaivalyaṃ gurusevayā II

84. यहां तक कि देवता, उपदेवता - गंधर्व, यक्ष, दिव्य संगीतकार, मानव जाति के पूर्वजों की आत्माएं, देवताओं के साथ रहने वाली आत्माएं, और ऐसी आत्माएं जो देवताओं और सांसारिक प्राणियों

की स्तुति करने के लिए मौजूद रहती हैं, वह भी उचित तरीके से नहीं जानते हैं कि आदरणीय गुरु की पूजा कैसे करनी है।

देव किन्नर गन्धर्वाः पितरोयक्षचारणाः I

मुनयोऽपि न जानन्ति, गुरुशुश्रूषणे विधिम् II

deva kinnara gandharvāḥ pitaroyakṣacāraṇāḥ I

munayo'pi na jānanti, guruśuśrūṣaṇe vidhim II

85 – 86. जिन लोगों में आदरणीय गुरु की सेवा करने की रुचि नहीं होती है, वे कभी भी आत्म-साक्षात्कार या मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते हैं, भले ही वे भगवान, दिव्य संगीतकार, पैतृक आत्माएं, देवताओं के सेवक, यक्ष, संत या महानिपुण हों जो अलौकिक शक्तियों के स्वामी हैं। ऐसे सभी व्यक्ति आमतौर पर प्राप्त की गई महान आध्यात्मिक शक्तियों के कारण अहंकारी होते हैं और इसके कारण, वे आदरणीय गुरु की सेवा करने के इस सत्य को समझने में असमर्थ हैं। इसलिये, वे हमेशा जन्म, और मृत्यु के महासागर में फ़ँसे रह जाते हैं। उनके सभी तप (ध्यान) पवनचक्की के बर्तन में पड़े पानी की तरह बर्बाद हो जाते हैं।

महाहंकार गर्वेण, तपोविद्या बलान्विताः I

संसार कुहरावर्ते, घटयंत्रे यथाघटाः II

न मुक्ता देवगन्धर्वाः पितरोयक्ष किन्नराः I

ऋषयः सर्वसिद्धाश्च गुरुसेवा पराग् मुखाः II

mahāhaṃkāra garveṇa, tapovidyā balānvitāḥ I

saṃsāra kuharāvarte, ghaṭayaṃtre yathāghaṭāḥ II

na muktā devagandharvāḥ pitaroyakṣa kinnarāḥ I

ṛṣayaḥ sarvasiddhāśca gurusevā parāg mukhāḥ II

87. हे सर्वश्रेष्ठ देवी! कृपया योग्य गुरु का ध्यान करने की विधि को ध्यानपूर्वक सुनें। वह गुरु जो सभी प्रकार के आनंद को प्रदान करता है, सभी सुखों को प्राप्त कराता है और सांसारिक तृप्ति के साथ-साथ मुक्ति या मोक्ष दोनों को भी प्रदान करता है।

ध्यानं शृणु महादेवि, सर्वानंद प्रदायकम् I

सर्वसौख्यकरं नित्यं, भुक्ति मुक्ति विधायकम् II

dhyānaṃ śṛṇu mahādevi, sarvānaṃda pradāyakam I

sarvasaukhyakaraṃ nityaṃ, bhukti mukti vidhāyakam II

88. मैं अपनी स्मृति में आदरणीय गुरु के रूप का आह्वान करता हूं, जो सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म हैं, मैं आदरणीय गुरु की प्रशंसा करता हूं, जो सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म हैं, मैं आदरणीय गुरु के प्रति श्रद्धा रखता हूं, जो सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म हैं और मैं आदरणीय गुरु की पूजा करता हूं, जो परम ब्रह्म हैं।

श्रीमत्परब्रह्म गुरुंस्मरामि, श्रीमत्परब्रह्म गुरुंवदामि I

श्रीमत्परब्रह्म गुरुंनमामि, श्रीमत्परब्रह्म गुरुंभजामि II

śrīmatparabrahma guruṃsmarāmi, śrīmatparabrahma guruṃvadāmi I

śrīmatparabrahma guruṃnamāmi, śrīmatparabrahma guruṃbhajāmi II

89. मैं आदरणीय गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जो ब्रह्म के पूर्ण आनंद रूप में है (सर्वशक्तिमान का गुण), जो उच्चतम सुखों को प्राप्त कराता है, जो एकरूप है उसका कोई दूसरा रूप नहीं है, जो सम्पूर्ण ज्ञान का अवतार है (सर्वशक्तिमान का एक गुण), जो अनंत आकाश की तरह असीमित है, जो "तू वही है" (अर्थात तू वही सर्वशक्तिमान है जिसको खोजने के लिए मैं आज तक संघर्ष कर रहा हूँ) जैसी महान शास्त्रीय उद्घोषणाओं का रूप हैं, जो शाश्वत है, जो अडिग है, जो सीमाओं से परे है, जो मन के तीन गुणों (रजस, तमस और सात्विक गुण जो गतिशीलता और स्थिरता के संतुलन को निर्धारित करता है) से परे है, और जो सभी मेधाओं का साक्षी है।

ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्

द्वंद्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् I

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षी भूतम्

भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि II

brahmānaṃdaṃ paramasukhadaṃ kevalaṃ jñānamūrtim

dvaṃdvātītaṃ gagana sadṛśaṃ tattvamasyādi lakṣyam I

ekaṃ nityaṃ vimalamacalaṃ sarvadhī sākṣī bhūtam

bhāvātītaṃ triguṇa rahitaṃ sadguruṃ taṃ namāmi II

90. मैं उस आदरणीय गुरु को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं, जो कि अनंत रूप से शुद्ध हैं, जिनके रूप को भौतिक आंखों से नहीं देखा जा सकता है (जिसका अर्थ है कि गुरु निराकार है), जिनका कोई आकार और रूप नहीं है, जो बिना दाग के है, जो अनंत ज्ञान का भंडार है, जो पूर्ण सत्य, चेतना और आनंद का रूप है, और जो ब्रह्म (सर्वव्यापी दैवीयता) की शुद्ध अवस्था है।

नित्यं शुद्धं निराभासं, निराकारं निरंजनम् ।

नित्यबोधं चिदानंदं, गुरुंब्रह्म नमाम्यहम् ॥

nityaṃ śuddhaṃ nirābhāsaṃ, nirākāraṃ niraṃjanam I

nityabodhaṃ cidānaṃdaṃ, guruṃbrahma namāmyaham II

91. आइए हम आदरणीय गुरु के उस दिव्य रूप का ध्यान करें जो चंद्रमा की तरह प्रकाशित है, जो अपने एक हाथ में एक पुस्तक, (ज्ञान का प्रतीक) और दूसरा हाथ वांछित वरदान देने की मुद्रा में रहता है, और जो कमल के फूल (भक्त का हृदय) के सिंहासन पर प्रभावान हैं। (अर्थात गुरु अपने शिष्य के हृदय में

ही विराजमान हैं)।

हृदम्बुजे कर्णिक मध्य संस्थे सिंहासने संस्थित दिव्यमूर्तिम् ।

ध्यायेद् गुरुं चन्द्रकळा प्रकाशम् चित् पुस्तकाभीष्ट वरं दधानम् ॥

hṛdambuje karṇika madhya saṃsthe siṃhāsane saṃsthita divyamūrtim I

dhyāyed guruṃ candrakaḻā prakāśam cit pustakābhīṣṭa varaṃ dadhānam II

92-93. मैं अपने आदरणीय गुरु को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ जो सफ़ेद वस्त्र पहने हुए हैं। जिनकी पूजा सफ़ेद फूलों से की गई है, जो मोतियों के हार से सुशोभित हैं, जो शांत आँखों वाले हैं, जो अपने बाईं ओर विराजमान ब्रह्मांडीय ऊर्जा (दैवीय शक्ति) के साथ बैठे हैं, जो आनंद का अनुभव कर रहे हैं, जिनकी आंखें करुणा से भर रहीं हैं, जो आनंद से बहुत आनंदित हो रहे हैं, जो कभी शांत स्वभाव के होते हैं, जो कभी सच्चे आत्म के प्रति जागृत हो जाते है, जिनका स्वभाव पूर्ण ज्ञान है, जिसे कभी योगियों द्वारा पूजा जाता है और जो मानव जाति का चिकित्सक है, जो जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के अनगिनत चक्रों से गुजरने की बीमारी को ठीक कर सकते हैं।

श्वेताम्बरं श्वेतविलेप पुष्पं, मुक्ता विभूषं मुदितं द्विनेत्रम् ।

वामांक पीठस्थित दिव्यशक्तिं, मंदस्मितं सान्द्र कृपानिधानम् ॥

आनंदमानंदकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निजबोधयुक्तम् ।

योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद् गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

śvetāmbaraṃ śvetavilepa puṣpaṃ, muktā vibhūṣaṃ muditaṃ dvinetram I

vāmāṃka pīṭhasthita divyaśaktiṃ, maṃdasmitaṃ sāndra kṛpānidhānam II

ānaṃdamānaṃdakaraṃ prasannaṃ, jñānasvarūpaṃ nijabodhayuktam I

yogīndramīḍyaṃ bhavarogavaidyaṃ, śrīmad guruṃ nityamahaṃ namāmi II

94. उस आदरणीय गुरु के प्रति मेरा अनुराग, जिसमें ब्रह्मांडीय सृजन, निर्वहन, विघटन, नियमन और अनुग्रह के पाँच गुण दिखाई पड़ते हैं।

यस्मिन्सृष्टि स्थिति ध्वंस, निग्रहानुग्रहात्मकम् ।

कृत्यं पंचविधं शश्वत्, भासते तं नमाम्यहम् ॥

yasminsṛṣṭi sthiti dhvaṃsa, nigrahānugrahātmakam I

kṛtyaṃ paṃcavidhaṃ śaśvat, bhāsate taṃ namāmyaham II

95. हर सुबह गुरु के आदरणीय रूप को याद रखना चाहिए, जो भौंहों के बीच स्थित सफेद कमल के फूल पर बैठा है, जो दो भुजाओं वाले हैं, जो दो आँखों वाले हैं, जिसके दोनों हाथ वरदान

देने और अनुदान देने की मुद्रा में हैं । और वो भय से सुरक्षा दिलाते हैं।

प्रातः शिरसि शुक्लाब्जे, द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ।

वराभययुतं शान्तं, स्मरेत्तं नामपूर्वकम् ॥

prātaḥ śirasi śuklābje, dvinetraṃ dvibhujaṃ gurum I

varābhayayutaṃ śāntaṃ, smarettaṃ nāmapūrvakam II

96. एक आदरणीय गुरु से श्रेष्ठ कुछ नहीं है। एक आदरणीय गुरु से बड़ा कुछ नहीं है और एक आदरणीय गुरु से अच्छा कुछ भी नहीं है। यह भगवान शिव की आज्ञा है, यह भगवान शिव की शिक्षा है, यह भगवान शिव की घोषणा है, और अंत में, भगवान शिव की दिव्य इच्छा भी यही है।

नगुरोरधिकं नगुरोरधिकं, नगुरोरधिकं नगुरोरधिकम् ।

शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः ॥

naguroradhikaṃ naguroradhikaṃ, naguroradhikaṃ naguroradhikam I

śivaśāsanataḥ śivaśāsanataḥ śivaśāsanataḥ śivaśāsanataḥ II

97. मेरे (यहाँ, मेरे का अर्थ भगवान शिव से है, क्योंकि वह देवी पार्वती को यह शिक्षा दे रहे हैं) और आदरणीय गुरु बीच कोई अंतर नहीं है। यही मेरी दिव्य इच्छा है, यही मेरी आज्ञा है और

यही मेरा संदेश है।

इदमेव शिवंत्विदमेव शिवं त्विदमेवशिवं त्विदमेवशिवम् ।

मम शासनत˜˚ ममशासनत˜˚, ममशासनत˜˚, ममशासनतः ॥

idameva śivaṃtvidameva śivaṃ tvidamevaśivaṃ tvidamevaśivam I

mama śāsanata mamaśāsanata, mamaśāsanata, mamaśāsanataḥ II

98. यदि कोई इस प्रकार से गुरु के वंदनीय रूप का ध्यान करता है (जैसा कि इस पाठ्यक्रम के उपरोक्त भाग में बताया गया है), उस व्यक्ति में सर्वोच्च ज्ञान अपने आप ही उत्पन्न होता है। (यह सच्चे ज्ञान का एक विशेष गुण है। यह अपने आप उत्पन्न होता है। यह बुद्धि द्वारा समझ में नहीं आ सकता है क्योंकि ज्ञान से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।)

एवं विधं गुरुं ध्यात्वा, ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम् ।

तत्सद् गुरुप्रसादेन, मुक्तोऽहमिति भावयेत् ॥

evaṃ vidhaṃ guruṃ dhyātvā, jñānamutpadyate svayam I

tatsad guruprasādena, mukto'hamiti bhāvayet II

99. व्यक्ति को अपने आदरणीय गुरु के बताए मार्ग पर चलकर अपने मन को शुद्ध करना चाहिए। सभी के भीतर रहने वाली

शाश्वत आत्मा की प्रकृति पर चिंतन या मनन करते समय, हर किसी को सभी क्षणिक दिखाई देने वाली वस्तुओं को अस्वीकार कर देना चाहिए (उन्हें स्थायी रूप से मन से समाप्त कर दिया जाना चाहिए)।

गुरुदर्शितमार्गेण, मनः शुद्धिं तु कारयेत् ।

अनित्यं खंडयेत् सर्वं, यत्किंचिदात्मगोचरम् ॥

gurudarśitamārgeṇa, manaḥ śuddhiṃ tu kārayet I

anityaṃ khaṃḍayet sarvaṃ, yatkiṃcidātmagocaram II

100. जानने वाला या मन जो सत्य को जानना चाहता है, वह पूर्ण ज्ञान की प्रकृति ही है, और जिस पदार्थ को मन द्वारा अनुभव किया जाना है वह स्वयं पूर्ण ज्ञान है। अर्थात व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि ज्ञानी और ज्ञेय एक और केवल एक ही है। जब तक किसी को इस सच्चाई का अनुभव नहीं होता, तब तक आत्म-साक्षात्कार नहीं होता है। मुक्ति या मोक्ष का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

ज्ञेयं सर्वस्वरूपंच, ज्ञानं च मन उच्यते ।

ज्ञानं ज्ञेयसमं कुर्यात्, नान्यः पन्था द्वितीयकः ॥

jñeyaṃ sarvasvarūpaṃca, jñānaṃ ca mana ucyate I

jñānaṃ jñeyasamaṃ kuryāt, nānyaḥ panthā dvitīyakaḥ II

101. ऊपर वर्णित एक आदरणीय गुरु की महिमा को सुनने के बाद भी, यदि कोई अभी भी आदरणीय गुरु की आलोचना करता है तो वह व्यक्ति सूर्य और चंद्रमा की आयु पर्यंत भयानक पीड़ा से गुजरता है।

एवं शृत्वा महादेवी, गुरुनिन्दां करोति यः ।

सयाति नरकं घोरं यावचन्द्र दिवाकरौ ॥

evaṃ śṛtvā mahādevī, gurunindāṃ karoti yaḥ I

sayāti narakaṃ ghoraṃ yāvacandra divākarau II

102. यदि किसी व्यक्ति को एक ब्रह्मांडीय चक्र में कई बार मनुष्य के रूप में जन्म लेना है, तो प्रत्येक मानव जन्म के अंत में एक आदरणीय गुरु को याद करना चाहिए। गुरु के आदरणीय रूप को याद करने में कोई दोष नहीं होना चाहिए। भले ही एक शिष्य या योग का अभ्यासी आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के बाद जब आदरणीय गुरु के नियंत्रण से मुक्त हो जाता है, फिर भी उसको अपने गुरु के आदरणीय रूप को याद करना नहीं भूलना चाहिए।

यावत् कल्पान्तको देहस्तावदेव गुरुं स्मरेत् ।

गुरुलो पो न कर्तव्यः, स्वच्छन्दो यदि वा भवेत् ॥

yāvat kalpāntako dehastāvadeva guruṃ smaret I

gurulo po na kartavyaḥ, svacchando yadi vā bhavet II

103. समझदार शिष्यों को कभी भी आदरणीय गुरु के सामने "हूँ" ऐसी आवाज़ (जो अनादर करने और असभ्य होने का संकेत देता है) नहीं करनी चाहिए। इसी तरह, उन्हें कभी भी वह बातचीत नहीं करनी चाहिए जो पूरी तरह सत्य न हो।

हुंकारेण न वक्तव्यं, प्राज्ञैः शिष्यैः कथञ्चन ।

गुरोरग्रे न वक्तव्य, मसत्यं च कदाचन ॥

huṃkāreṇa na vaktavyaṃ, prājñaiḥ śiṣyaiḥ kathañcana I

guroragre na vaktavya, masatyaṃ ca kadācana II

104. "तू", “तुम”, "हम" आदि शब्दों का उपयोग करके अहंकार या क्रोध के साथ आदरणीय गुरु से कभी भी बात नहीं करनी चाहिए। इसी तरह, किसी को भी अपने आदरणीय गुरु से बातचीत में उनको जीतने के आशय से तर्क वितर्क में नहीं फंसना चाहिए। यदि कोई इन नियमों का पालन नहीं करता है, तो वह व्यक्ति एक जल रहित वन भूमि में एक राक्षस (ब्रह्मराक्षस) के रूप में जन्म लेगा।

गुरु'त्वं' कृत्यहुं - कृत्य, गुरुं निर्जित्य वादतः ।

अरण्येनिर्जलेदेशे स भवेत् ब्रह्म राक्षसः ॥

guru'tvaṃ' kṛtyahuṃ - kṛtya, guruṃ nirjitya vādataḥ I

araṇyenirjaledeśe sa bhavet brahma rākṣasaḥ II

105. हे पार्वती! यदि किसी को ऋषि या राक्षसों (दुष्ट जाति) या यहां तक कि किसी दिव्यात्मा (जैसे देवता आदि) द्वारा श्राप दिया जाता है, तो एक आदरणीय गुरु उन्हें असामयिक मृत्यु से बचा सकता है।

मुनिभिः पन्नगैर्वाऽपि सुरैर्वा शापितो यदि ।

कालमृत्यु भयाद्वापि, गुरुरक्षति पार्वति ॥

munibhiḥ pannagairvā'pi surairvā śāpito yadi I

kālamṛtyu bhayādvāpi, gururakṣati pārvati II

106. जो दैवीय आत्मा की तरह श्राप देने में सक्षम हैं, वे एक आदरणीय गुरु की उपस्थिति में शक्तिहीन हैं। वास्तव में, वे आदरणीय गुरु से हस्तक्षेप के कारण जल्द ही नष्ट हो जाएंगे।

अशक्ता हि सुराद्याश्च, अशक्ता मुनयस्तथा ।

गुरुशापेन ते शीघ्रं, क्षयं यान्ति न संशयः ॥

aśaktā hi surādyāśca, aśaktā munayastathā I

guruśāpena te śīghraṃ, kṣayaṃ yānti na saṃśayaḥ II

107. हे पार्वती! दो-शब्द "गुरु" सभी मंत्रों का राजा है। सभी महान धर्मग्रंथों में, वेद और दिव्य आध्यात्मिक उद्धरणों

(संस्कृत में ये महावाक्य या दिव्यवाक्य कहाते हैं) में यह घोषणा की गई है कि "गुरु" शब्द सर्वश्रेष्ठ है जो किसी व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार या मोक्ष आदि की ओर ले जाती है।

मंत्रराजमिदं देवि, गुरुरित्यक्षर द्वयम् ।

स्मृतिवेदार्ध वाक्येन, गुरुः साक्षात् परंपदम् ॥

maṃtrarājamidaṃ devi, gururityakṣara dvayam I

smṛtivedārdha vākyena, guruḥ sākṣāt paraṃpadam II

108. वह व्यक्ति, जो वास्तव में गुरु की सेवा करता है, वास्तव में सच्चा भिक्षु या संन्यासी या उपदेशक आदि है, भले ही उसके पास शास्त्रों (प्राचीन काल से मौखिक या लिखित परंपरा के द्वारा ज्ञान का हस्तांतरण) का ज्ञान न हो। बाकी सब लोगों ने ऐसे पवित्र व्यक्ति के केवल वस्त्र पहने हुए हैं।

शृति स्मृतिअविज्ञाय, केवलं गुरुसेवकाः ।

ते वै संन्यासिनः प्रोक्ता, इतरे वेषधारिणाः ॥

śṛti smṛtiavijñāya, kevalaṃ gurusevakāḥ I

te vai saṃnyāsinaḥ proktā, itare veṣadhāriṇāḥ II

109 – 110. एक आदरणीय गुरु की कृपा से, प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के भीतर रहने वाली व्यक्ति की आत्मा का ध्यान करना

चाहिए। हम सभी को यह अनुभव करना चाहिए कि आत्म तत्व शाश्वत है, यह सर्वशक्तिमान (या ब्रह्म) है, और यह किसी भी रूप या विशेषताओं से रहित है। सब ब्रह्म (या परम देवत्व) है। दिव्यता एक दीपक की तरह फैलती है जिससे पुनः दूसरा दीपक जलाया जाता है। मूल दीपक और अगले दीपक के बीच कोई अंतर नहीं है जिसे पहले से ही प्रकाशित किया गया है। इसी तरह, दो मनुष्यों के बीच कोई अंतर नहीं देखना चाहिए। यह "गुरु-शिष्य" के मार्ग का सार है, जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान के मार्ग में प्रवेश करता है।

नित्यं ब्रह्मनिराकारं निर्गुणं बोधयेत् परम् ।

सर्वं ब्रह्म निराभासं दीपो दीपान्तरं यथा ॥

गुरोःकृपा प्रसादेन, आत्मारामं निरीक्षयेत् ।

अनेन गुरुमार्गेण, स्वात्म ज्ञानं प्रवर्तते ॥

nityaṃ brahmanirākāraṃ nirguṇaṃ bodhayet param I

sarvaṃ brahma nirābhāsaṃ dīpo dīpāntaraṃ yathā II

guroḥkṛpā prasādena, ātmārāmaṃ nirīkṣayet I

anena gurumārgeṇa, svātma jñānaṃ pravartate II

111. इस ब्रह्मांड में घास के एक तिनके से लेकर ईश्वर तक सभी चर और अचर वस्तुएं स्वयं ब्रह्म (अर्थात गुरु) ही है। इसलिए, मैं ऐसे आदरणीय गुरु को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं परमात्म स्वरूपकम् ।

स्थावरं जंगमं चैव, प्रणमामि जगन्मयम् ॥

ābrahmastamba paryantaṃ paramātma svarūpakam I

sthāvaraṃ jaṃgamaṃ caiva, praṇamāmi jaganmayam II

112. मैं उस वंदनीय गुरु तत्व को नमन करता हूँ जो मेरे व्यक्तिगत स्व के रूप में शाश्वत है। गुरु का यह वंदनीय रूप किसी भी बहुलता से रहित (एकरूप) है। यह वह रूप है जो पूर्ण ज्ञान, पूर्ण अस्तित्व और पूर्ण आनंद के तीन गुणों को समाहित करता है। इसके अलावा, यह पूर्ण सत्य भी है, पूर्ण (इसकी प्रकृति में किसी भी प्रकार की अपूर्णता का कोई भान नहीं है) है, निराकार है और किसी भी अलंकार से रहित है।

वन्देऽहं सच्चिदानंदं, भेदातीतं सदा गुरुम् ।

नित्यं पूर्णं निराकारं, निर्गुणं स्वात्म संस्थितम् ॥

vande'haṃ saccidānaṃdaṃ, bhedātītaṃ sadā gurum I

nityaṃ pūrṇaṃ nirākāraṃ, nirguṇaṃ svātma saṃsthitam II

113. गुरु का वंदनीय रूप श्रेष्ठ आनंद की तरह है। यह शुद्ध माणिक के समान है और सभी के हृदय स्थान के केंद्र में रहता है। इसलिए, गुरु का ऐसा वंदनीय रूप ध्यान करने योग्य है।

परात्परतरं ध्येयं, नित्यमानन्दकारकम् ।

हृदयाकाश मध्यस्थं, शुद्धस्फटिक सन्निभम् ॥

parātparataraṃ dhyeyaṃ, nityamānandakārakam I

hṛdayākāśa madhyasthaṃ, śuddhasphaṭika sannibham II

114. शुद्ध माणिक का रूप दर्पण में बहुत शांत दिखाई देता है। इसी प्रकार आनंद से भरा मन आत्मन के शांत जल में प्रतिबिम्बित हो रहा है। इसका अर्थ है कि शिष्य को अपने भीतर यह एहसास होता है कि वह वास्तव में वही दिव्यता है, जिसे वह हर समय पाने की कोशिश कर रहा था (अर्थात उसे यह अनुभव होता है कि, "मैं वह हूं" का वास्तिवक अर्थ क्या है)।

स्फटिक प्रतिमारूपं, दृश्यते दर्पणे यथा ।

तदात्मनि चिदाकार मानंदं सोऽहामित्युत ॥

sphaṭika pratimārūpaṃ, dṛśyate darpaṇe yathā I

tadātmani cidākāra mānaṃdaṃ so'hāmityuta II

115. हे पार्वती! जैसा कि मैं आपको बताता हूं कि अंगूठे के आकार की दिव्यता (या सर्वशक्तिमान) का आनंद हर किसी के दिल में कैसे आता है। (विभिन्न चक्र या ऊर्जा केंद्र मानव शरीर में मस्तिष्कमेरु प्रणाली के साथ स्थित हैं। संस्कृत ग्रंथों में आत्मा या देवत्व के स्थान का वर्णन किया गया है, जो पांचवें

चक्र में निवास करता है, जिसे "अनाहत चक्र" कहा जाता है। एक अंगूठे के आकार की लौ का रूप। (निश्चित ही यह अदृश्य रूप में ही है।)

अंगुष्ठमात्र पुरुषं ध्यायतश्चिन्मयं हृदि I

तत्र स्फुरति भावोयः शृणुतं कथयाम्यहम् II

aṃguṣṭhamātra puruṣaṃ dhyāyataścinmayaṃ hṛdi I

tatra sphurati bhāvoyaḥ śṛṇutaṃ kathayāmyaham II

116. हे पार्वती! उसे जानो कि जो सर्वोच्च आत्मन (व्यक्तिगत स्व) या ब्रह्म (सार्वभौमिक आत्मा या सर्वशक्तिमान) है, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है, जिसे समझा भी नहीं जा सकता है, जो किसी भी नाम और रूप से रहित है और जो किसी भी प्रकार की ध्वनि से भी रहित है।

अगोचरं तथाऽगम्यं, नामरूप विवर्जितम् I

निः शब्दं तद्विजानीयात्, स्वभावं ब्रह्म पार्वती II

agocaraṃ tathā'gamyaṃ, nāmarūpa vivarjitam I

niḥ śabdaṃ tadvijānīyāt, svabhāvaṃ brahma pārvatī II

117. जिस प्रकार कपूर और फूलों की खुशबू का चारों ओर फैलना बहुत स्वाभाविक है। और इसी तरह, ठंड और गर्मी भी एक

प्राकृतिक घटना है। उसी प्रकार, परम ब्रह्म (या सर्वशक्तिमान या देवत्व) भी प्रकृति में शाश्वत है।

यथागन्धः स्वभावेन, कर्पूर कुसुमादिषु ।

शीतोष्णादि स्वभावेन, तथाब्रह्मच शाश्वतम् ॥

yathāgandhaḥ svabhāvena, karpūra kusumādiṣu I

śītoṣṇādi svabhāvena, tathābrahmaca śāśvatam II

118. जिस प्रकार लार्वा आंतरिक रूप से ध्यान केंद्रित करके (या एक तरह से ध्यान लगाकर) मधुमक्खी के रूप में रूपांतरित या प्रकट होते हैं। इसी प्रकार, एक व्यक्तिगत आत्मा (एक इंसान के रूप में जन्मने वाली) आदरणीय गुरु को ब्रह्म (या सर्वशक्तिमान) के रूप में ध्यान करने से धीरे-धीरे अपने दिव्य स्वभाव (जिसे आत्म-साक्षात्कार भी कहा जाता है) को प्रकट करने लगती है।

स्वयं तथा विधो भूत्वा, स्थातव्यं यत्र कुत्र चित् ।

कीटभ्रमरवत्तत्र, ध्यानं, भवति तादृशम् ॥

svayaṃ tathā vidho bhūtvā, sthātavyaṃ yatra kutra cit I

kīṭabhramaravattatra, dhyānaṃ, bhavati tādṛśam II

119. यदि कोई शिष्य उपरोक्त तरीके से आदरणीय गुरु का

ध्यान करता है, तो वह ब्रह्म (या देवत्व या सर्वशक्तिमान) के साथ एक हो जाता है। वह पैदा होने की शक्ति के प्रभाव से (“पिंड” या भविष्य में मानव भ्रूण का रूप लेने से), और गतिमान जीवनी शक्ति के प्रभाव से (“पद” या प्राणियों के रूप में गतिमान होकर जन्म लेने से), और रूप लेने वाली शक्ति के प्रभाव से (“रूप” या मनुष्य का रूप लेने से), मुक्त हो जाता है। इस प्रक्रिया में कोई संदेह नहीं है। (यहाँ, प्रधान गुण को तीन गुणों में विभक्त किया गया है। एक जो सृजन करने की क्षमता रखता है, दूसरा जो गति करने की क्षमता रखता है, और तीसरा जो रूप लेने की क्षमता रखता है। जिसके परिणामस्वरूप एक इंसान का निर्माण होता है।)

गुरुध्यानं तथाकृत्वा, स्वयं ब्रह्ममयो भवेत् I

पिण्डेपदे तथारूपे, मुक्त्तोऽसौ नात्रसंशयः II

gurudhyānaṃ tathākṛtvā, svayaṃ brahmamayo bhavet I

piṇḍepade tathārūpe, muktto'sau nātrasaṃśayaḥ II

देवी पार्वती ने तब इस प्रकार बात कही:

120. हे शंकर! "पिंड" से क्या अभिप्राय है? हे महान प्रभु! वह क्या है जिसे "पद" कहा जाता है? और वह क्या है जिसे "रूप से परे" और जिसे "रूप" कहा जाता है? कृपया समझाएँ!

पिण्डं किं तु महादेव, पदं किं समुदाहृतम् I

रूपातीतं च रूपं किं, एतदाख्याहि शंकर II

piṇḍaṃ kiṃ tu mahādeva, padaṃ kiṃ samudāhṛtam I

rūpātītaṃ ca rūpaṃ kiṃ, etadākhyāhi śaṃkara II

महान भगवान (शंकर या शिव) ने फिर इस प्रकार कहा:

121. "पिंड" का अर्थ है कुंडलिनी ऊर्जा या स्वयं में (मानव भ्रूण रूप में) जो विकास की अव्यक्त शक्ति है। "पद" का अर्थ है सांस या जीवनी शक्ति जो जीव में प्रयत्न के रूप में प्रकट होती है। "रूप" अर्थात "बिंदू" (सभी रूपों का सूक्ष्म कारण। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के अनुसार ब्रह्मांड को "नाद" और "बिंदू" अर्थात क्रमशः गति और गोलाकार सूक्ष्म बिंदूओं से मिलाकर बनाया गया है) वह शक्ति है जो जीव को भौतिक रूप प्रदान करती है। और जिसका कोई रूप या गुण नहीं (ब्रह्म या सर्वशक्तिमान) है, उसको "रूप से परे" कहा जाता है।

पिण्डं कुंडलिनी शक्तिः पदं हंस मुदाहृतम् ।

रूपं बिंदुरिति ज्ञेयं, रूपातीतं निरंजनम् ॥

piṇḍaṃ kuṃḍalinī śaktiḥ padaṃ haṃsa mudāhṛtam I

rūpaṃ biṃduriti jñeyaṃ, rūpātītaṃ niraṃjanam II

122. जो इन तीनों बलों "पिंड" (रचनात्मक बल), "पद" (आंदोलन के रूप में प्रकट हुई जीवन शक्ति) और "रूप" (आकार लेने वाली शक्ति) से मुक्त हो जाता है, वह सच्ची मुक्ति (जन्म और मृत्यु

का चक्र से मुक्ति) को प्राप्त होता है, या आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त करता है या मोक्ष आदि प्राप्त करता है, और इसमें कोई संदेह नहीं है।

पिण्डे मुक्ता पदेमुक्ता, रूपेमुक्ता वरानने ।

रूपातीत तु ये मुक्तास्ते मुक्ता नात्र संशयः ॥

piṇḍe muktā pademuktā, rūpemuktā varānane I

rūpātīta tu ye muktāste muktā nātra saṃśayaḥ II

123. व्यक्ति को सर्व-व्यापक होना चाहिए (अर्थात सर्व-व्याप्त ब्रह्म या देवत्व में विलीन होना चाहिए) और परम तत्व या सर्वोच्च का बोध होना चाहिए। गुरु तत्व या परम तत्व के अलावा और कुछ नहीं है। बाकी सभी चीजों का कोई आधार नहीं है। क्योंकि गुरु तत्व के अतिरिक्त इसके निवास का दूसरा स्थान नहीं हैं।

स्वयं सर्वमयो भूत्वा, परं तत्त्वं विलोकयेत् ।

परात्पर तरं नान्यत् , सर्वमेतन्निरालयम् ॥

svayaṃ sarvamayo bhūtvā, paraṃ tattvaṃ vilokayet I

parātpara taraṃ nānyat , sarvametannirālayam II

124. एक वंदनीय गुरु की कृपा से, जब उच्चतम सत्य (गुरु

तत्व) की प्रकृति का अनुभव होता है, तब उसे सभी आसक्तियों और ललक या तलब का त्याग कर एकांत में बैठना चाहिए।

तस्यावलोकनं प्राप्य, सर्व संग विवर्जितम् I

एकाकी निःस्पृह शान्तस्तिष्ठासेत् तत्प्रसादतः II

tasyāvalokanaṃ prāpya, sarva saṃga vivarjitam I

ekākī niḥspṛha śāntastiṣṭhāset tatprasādataḥ II

125. हर किसी को आनंद से भरे अपने मन से पूर्ण संतुष्ट होना चाहिए। चाहे वह किसी भी भौतिकवादी चीजों को प्राप्त करता है या अपने स्वयं के "कर्म" के आधार पर प्राप्त नहीं करता है (पिछले कार्यों से संचित कर्म एवं धार्मिक योग्यता के कारण)। इसी तरह, किसी दूसरे के द्वारा कुछ प्राप्त कर लिये जाने पर परेशान नहीं होना चाहिए, चाहे वे छोटे हों या बड़े।

लब्धं वाऽधन लब्धं वा, स्वल्पं वा बहुळं तधा I

निष्कामेनैव भोक्तव्यं, सदा सन्तुष्ट चेतसा II

labdhaṃ vā'dhana labdhaṃ vā, svalpaṃ vā bahuḻaṃ tadhā I

niṣkāmenaiva bhoktavyaṃ, sadā santuṣṭa cetasā II

126. बुद्धिमान लोग कहते हैं कि मन की मुक्त अवस्था सर्वज्ञ है। परिणामस्वरूप वह विशेष व्यक्ति (यहां इसका अर्थ

व्यक्तिगत आत्मा है) जो मानव शरीर में निवास करता है, वह सभी के साथ एकाकार हो जाता है। इसलिए, उसको हमेशा आनंदित, शांत और स्थिर होना चाहिये।

सर्वज्ञ पदमित्याहु, र्देही सर्वमयो बुधाः ।

सदानंदः सदाशान्तो, रमते यत्र कुत्र चित् ॥

sarvajña padamityāhu, rdehī sarvamayo budhāḥ I

sadānaṃdaḥ sadāśānto, ramate yatra kutra cit II

127. हे देवी! मैंने आपको एक मुक्त व्यक्ति के गुणों की व्याख्या की है। ऐसा व्यक्ति जहां भी रहता है, वह स्थान पवित्र और शुभ हो जाता है।

यत्रैव तिष्ठते सोऽपि स देशः पुण्यभाजनम् ।

मुक्तस्य लक्षणं देवि, तवाग्रे कथितं मया ॥

yatraiva tiṣṭhate so'pi sa deśaḥ puṇyabhājanam I

muktasya lakṣaṇaṃ devi, tavāgre kadhitaṃ mayā II

128. हे देवी! मैंने आपको समझाया है कि "आदरणीय गुरु की पूजा" के मार्ग पर चलकर मोक्ष (आत्म-साक्षात्कार या मुक्ति) कैसे प्राप्त होता है। इसी प्रकार, मैंने आपको उनका ध्यान करके एक आदरणीय गुरु की पूजा करने का उद्देश्य समझाया है।

उपदेशस्तथा देवि, गुरुमार्गेण मुक्तिदः ।

गुरुभक्ति स्तथा ध्यानं, सकलं तव कीर्तितम् ॥

upadeśastathā devi, gurumārgeṇa muktidaḥ I

gurubhakti stathā dhyānaṃ, sakalaṃ tava kīrtitam II

129. हे महान प्रज्ञा वाली! (हे देवी!) अब मैं आपको समझाऊँगा कि उपर्युक्त सभी योग साधनाएँ करने से सामान्य जगत को क्या लाभ होगा। इन प्रथाओं को भौतिकवादी प्रकृति का होने की भूल नहीं करना (यह सत्य है कि साधकों को कुछ भौतिक लाभ भी अवश्य प्राप्त होते हैं। और ये केवल अतिरिक्त लाभ हैं लेकिन इस कारण किसी को गलत निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहिए)। उपर्युक्त सभी उद्धृत या वर्णित प्रथाएं वास्तव में दिव्य प्रकृति की हैं।

अनेन यद् भवेत्कार्यं, तद्वदामि महामते ।

लोकोपकारकं देवि, लौकिकं तु न भावयेत् ॥

anena yad bhavetkāryaṃ, tadvadāmi mahāmate I

lokopakārakaṃ devi, laukikaṃ tu na bhāvayet II

130. वे मानव जिनके पास ज्ञान (उनके दिव्य स्वभाव) का अभाव है, वे अपने कर्मों (अतीत, वर्तमान और भविष्य के कार्यों के माध्यम से प्राप्त धार्मिक गुण या अवगुण) के अनुसार

सांसारिक जीवन के सागर में डूब जाते हैं। जबकि जो बुद्धिमान होते हैं वे भी कुछ कार्य (कर्म) करते हैं लेकिन वे ऐसी मानसिक स्थिति के साथ करते हैं जो किसी जुनून या लगाव या लालसा से रहित होता है। इसलिए, वे कर्म उन्हें बांधते नहीं हैं या वे इस तरह के कार्यों के कारण किसी वस्तु या किसी व्यक्ति के साथ बंधन में नहीं बंधते हैं (यहां इसका अर्थ है कि उन कार्यों का कोई परिणाम नहीं होगा या वे कार्य के कानून से मुक्त होंगे)।

लौकिकात्कर्मणो यान्ति, ज्ञान हीना भवार्णवम् ।

ज्ञानी तु भावयेत्सर्वं, कर्म निष्कर्म यत्कृतम् ॥

laukikātkarmaṇo yānti, jñāna hīnā bhavārṇavam I

jñānī tu bhāvayetsarvaṃ, karma niṣkarma yatkṛtam II

131. जो कोई भी इस गुरु गीता (इस पाठ्यक्रम) को पढ़ता है या यहाँ तक कि इसे सुनता है या यहाँ तक कि इसकी एक प्रति भी बनाता है और इसे दूसरों को दिव्यता के प्रति समर्पण के दृष्टिकोण से उपहार के रूप में अर्पित करता है, तो वह सभी सांसारिक समस्याओं से मुक्त हो जाता है।

इदंतु भक्ति भावेन, पठते शृणुते यदि ।

लिखित्वा तत्प्रदातव्यं, दानं दक्षिणया सह ॥

idaṃtu bhakti bhāvena, paṭhate śṛṇute yadi I

likhitvā tatpradātavyaṃ, dānaṃ dakṣiṇayā saha II

132. हे देवी! मैंने आपके सामने गुरु गीता के रूप में शुद्ध सत्य का सार प्रकट किया है। शरीर बदलते रहने वाले (जन्म और मृत्यु के चक्र) अस्तित्व की बीमारी से मुक्ति पाने के लिए इस पाठ का बार-बार अध्ययन करते रहना चाहिए।

गुरुगीतात्मकं देवि, शुद्धतत्त्वं मयोदितम् ।

भवव्याधि विनाशार्थं, स्वयमेव जपेत्सदा ॥

gurugītātmakaṃ devi, śuddhatattvaṃ mayoditam I

bhavavyādhi vināśārthaṃ, svayameva japessadā II

133. इस पाठ की पुनरावृत्ति की प्रक्रिया के दौरान गुरु गीता के एक अक्षर का भी उच्चारण अन्य सभी मंत्रों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। अन्य सभी मंत्र गुरु गीता के एक अक्षर के सोलहवें भाग से कम मूल्य के हैं।

गुरुगीताक्षरैकं तु, मंत्रराजमिमं जपेत् ।

अन्येच, विविधा मंत्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥

gurugītākṣaraikaṃ tu, maṃtrarājamimaṃ japet I

anyeca, vividhā maṃtrāḥ kalāṃ nārhanti ṣoḍaśīm II

134. गुरु गीता की पुनरावृत्ति की प्रक्रिया में शामिल होने से, व्यक्ति को एक विशेष धार्मिक योग्यता प्राप्त हो जाती है। सभी पाप या अधर्म नष्ट हो जाते हैं और सभी प्रकार की दरिद्रता अथवा कष्ट भी नष्ट हो जाते हैं।

अनन्त फलमाप्नोति, गुरुगीता जपेन तु ।

सर्वपाप प्रशमनं, सर्वदारिद्र्य नाशनम् ॥

ananta phalamāpnoti, gurugītā japena tu I

sarvapāpa praśamanaṃ, sarvadāridrya nāśanam II

135-136. गुरु गीता के दोहराव के कारण असमय मृत्यु से संबंधित सभी भय दूर हो जाते हैं। सभी कष्टों का निवारण होगा। भूतों, राक्षसों, बुरी आत्माओं, चोरों और शेर जैसे जंगली जानवरों से संबंधित सभी भय दूर हो जाते हैं। सभी शक्तिशाली और महा रोग नष्ट हो जाते हैं। सभी प्रकार की समृद्धि प्रदान की जाती है। व्यक्ति को कुछ तांत्रिक साधनाओं में भी पूर्णता प्राप्त होती है, जो कि कुछ वस्तुओं के लिए की जाती है, जैसे कि विपरीत लिंग के प्यार को आकर्षित करना, अन्य प्राणियों को वश में करने की शक्ति प्राप्त करना, इत्यादि। ऐसी सभी प्रथाओं के फल प्राप्त करने के लिए (या इस तरह की प्रथाओं में पूर्णता प्राप्त करने के लिए), हरेक को नियमित रूप से गुरु गीता की पुनरावृत्ति करनी चाहिए।

कालमृत्युभयहरं, सर्वसंकट नाशनम् ।

यक्षराक्षस भूतानां, चोरव्याघ्र भयापहम् ॥

महाव्याधिहरं सर्वं, विभूति सिद्धिदं भवेत् ।

अथवा मोहनं वश्यं, स्वयमेव जपेत्सदा ॥

kālamṛtyubhayaharaṃ, sarvasaṃkaṭa nāśanam I

yakṣarākṣasa bhūtānāṃ, coravyāghra bhayāpaham II

mahāvyādhiharaṃ sarvaṃ, vibhūti siddhidaṃ bhavet I

athavā mohanaṃ vaśyaṃ, svayameva japetsadā II

137-139. हे देवी! अब मैं आपको उन विभिन्न लाभों के बारे में बताऊँगा जो विभिन्न प्रकार के ध्यान आसन (जिसे संस्कृत में "आसन" कहा जाता है लेकिन अर्थ "मुद्रा" से भ्रमित नहीं होना चाहिए) पर बैठकर गुरु गीता के दोहराव से उत्पन्न होते हैं। कपड़े से बने आसन पर बैठकर गुरु गीता की पुनरावृत्ति करने से गरीबी दूर होती है; चट्टान को आसन बनाना बीमारी का कारण बनता है; सादे मैदान में (पृथ्वी पर) बैठना दुःख लाता है, और लकड़ी से बने आसन पर गुरु गीता की पुनरावृत्ति बेकार हो जाती है (कोई प्रभाव नहीं लाता है)। जबकि काले हिरण की खाल से बने आसन पर बैठकर इसे दोहराने से ज्ञान प्रप्ति होती है; बाघ की खाल से बने आसन से आत्म-साक्षात्कार होता है, और धन की देवी की कृपा भी मिलती है; पवित्र "कुशा" घास से बना आसन ज्ञान लाता है और अंत में ऊन से बना आसन सभी अलौकिक शक्तियों को प्राप्त कराता है।

वस्त्रासने च दारिद्र्य, पाषाणेरोग संभवः ।

मेदिन्यां दुःखमाप्नोति, काष्टे भवति निष्फलम् ॥

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि, र्मोक्ष श्री र्व्याघ्रचर्मणि ।

कुशासने ज्ञानसिद्धिः सर्वसिद्धिस्तु कम्बले ॥

कुशैर्वा दुर्वया देवि, आसने शुभ्र कम्बले ।

उपविश्य ततो देवि, जपेदेकाग्रमानसः ॥

vastrāsane ca dāridrya, pāṣāṇeroga saṃbhavaḥ I

medinyāṃ duḥkhamāpnoti, kāṣṭe bhavati niṣphalam II

kṛṣṇājine jñānasiddhi, rmokṣa śrī rvyāghracarmaṇi I

kuśāsane jñānasiddhiḥ sarvasiddhistu kambale II

kuśairvā durvayā devi, āsane śubhra kambale I

upaviśya tato devi, japedekāgramānasaḥ II

140. हे प्रिया! (देवी भगवान शिव की पत्नी हैं) मन की शांति पाने के लिए सफेद रंग के आसन पर बैठकर गुरु गीता का पाठ करना चाहिए। किसी को आकर्षित करने या वश में करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए लाल रंग के आसन पर; दुष्ट आत्माओं को दूर करने के लिए काले रंग के आसन पर, और धन प्रप्ति के लिए और पीले रंग के आसन पर।

ध्येयं शुक्लंच शान्त्यर्धं, वश्ये रक्तासनं प्रिये ।

अभिचारे कृष्णवर्णं, पीतवर्णनं धनागमे ॥

dhyeyaṃ śuklaṃca śāntyardhaṃ, vaśye raktāsanaṃ priye I

abhicāre kṛṣṇavarṇaṃ, pītavarṇanaṃ dhanāgame II

141. (जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है) सभी को गुरु गीता की पुनरावृत्ति करनी चाहिए। मन की शांति प्राप्त करने के लिए उत्तरी दिशा को मुख करके बैठें। किसी को आकर्षित करने या वश में करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए पूर्वी दिशा की ओर मुख करके बैठें। मृत्यु आदि के कारण किसी को भी समाप्त करने के लिए (दुष्ट आत्माओं को समाप्त करना, आदि) दक्षिणी दिशा को मुख करके बैठें और धन प्राप्ति के लिए पश्चिमी दिशा कि ओर मुख करके बैठें।

उत्तरे शान्ति कामस्तु, वश्ये पूर्व मुखोजपेत् ।

दक्षिण मारणं प्रोक्तं, पश्चिमे च धनागमः ॥

uttare śānti kāmastu, vaśye pūrva mukhojapet I

dakṣiṇa māraṇaṃ proktaṃ, paścime ca dhanāgamaḥ II

142. गुरु गीता की नियमित रूप से पुनरावृत्ति द्वारा आप सभी को मंत्रमुग्ध कर सकते हैं। किसी भी प्रकार के बंधन से किसी को भी मुक्त करना संभव है। देवता, देवियां और राजा सभी ऐसे

व्यक्ति के प्रति अनुकूल हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को अस्तित्व के सभी आयामों (विभिन्न विदेशी दुनिया - एलियन इत्यादि) को अपने नियंत्रण में करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है।

मोहनं सर्वभूतानां, बन्ध मोक्षकरं भवेत् ।

देवराज प्रियकरं, सर्वलोक वशं भवेत् ॥

mohanaṃ sarvabhūtānāṃ, bandha mokṣakaraṃ bhavet I

devarāja priyakaraṃ, sarvaloka vaśaṃ bhavet II

143. गुरु गीता के दोहराव से व्यक्ति किसी भी संस्था या प्राणी को स्थिर करने और अपने अधीन करने की शक्ति प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति में सकारात्मक गुणों (मन की भावनाओं से संबंधित) का उत्थान होता है। अतीत में किये गये सभी नकारात्मक कर्म नष्ट हो जाते हैं। व्यक्ति को अच्छे कार्यों को करने का अवसर प्राप्त होता है।

सर्वेषा स्तम्भन करं, गुणानां च विवर्धनम् ।

दुष्कर्म नाशनं चैव, सुकर्म सिद्धिदं भवेत् ॥

sarveṣā stambhana karaṃ, guṇānāṃ ca vivardhanam I

duṣkarma nāśanaṃ caiva, sukarma siddhidaṃ bhavet II

144. दैनिक जीवन में व्यक्ति की सभी कठिन, जटिल और

असफल गतिविधियाँ आसानी से हल हो जाती हैं। नौ ग्रह जो किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं, इससे व्यक्ति उनके डर से मुक्त हो जाता है। गहरी नींद के दौरान सभी बुरे सपने समाप्त हो जाते हैं। अच्छे और सकारात्मक सपने और परिणाम तेजी से अर्जित होते हैं।

असिद्धं साधयेत् कार्यं, नवग्रह भयापहम् ।

दुः स्वप्न नाशनं चैव, सुस्वप्न फलदायकम् ॥

asiddhaṃ sādhayet kāryaṃ, navagraha bhayāpaham I

duḥ svapna nāśanaṃ caiva, susvapna phaladāyakam II

145. गुरु गीता की पुनरावृत्ति की शक्ति से, हर संभव तरीके से (सभी परिस्थितियों में) मन की शांति प्राप्त होती है। नि:संतान महिलाओं को संतान का आशीर्वाद मिलता है। महिलाओं को, सामान्य रूप से शुभता का आशीर्वाद दिया जाता है और इस प्रकार विधवापन को रोक दिया जाता है।

सर्वशान्तिकरं नित्यं तथावंध्या सुपुत्रदम् ।

अवैधव्यकरं स्त्रीणां, सदा सौभाग्यदायकं ॥

sarvaśāntikaraṃ nityaṃ tathāvaṃdhyā suputradam I

avaidhavyakaraṃ strīṇāṃ, sadā saubhāgyadāyakaṃ II

146. यह साधक को अच्छा स्वास्थ्य, लंबा जीवन, बच्चे और नाती-पोते प्रदान करता है। यदि इस ग्रन्थ का किसी विधवा के द्वारा बिना किसी लालसा या स्वार्थी इच्छाओं के अध्ययन किया जाता है तो उसे आत्म-साक्षात्कार या मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आयुरारोग्य मैश्वर्यं, पुत्र पौत्र प्रवर्थनम् ।

अकामतः स्त्री विधवा, जपान्मोक्ष मवाप्नुयात् ॥

āyurārogya maiśvaryaṃ, putra pautra pravarthanam I

akāmataḥ strī vidhavā, japānmokṣa mavāpnuyāt II

147. यदि किसी विधवा द्वारा बिना किसी भावुक या स्वार्थी इच्छाओं के अध्ययन किया जाता है, तो वह अगले जन्म में गैर-विधवापन प्राप्त करती है। उसके जीवन से सभी प्रकार के दुख, भय और बाधाएँ नष्ट हो जाती हैं। इसके अलावा, उसे बुरे श्रापों (या सभी दुष्ट व्यवधानों) से भी मुक्त कर दिया जाता है।

अवैधव्यं सकामा तु, लभते चान्य जन्मनि ।

सर्व दुःख भयं विघ्नं, नाशयेच्छाप हारकम् ॥

avaidhavyaṃ sakāmā tu, labhate cānya janmani I

sarva duḥkha bhayaṃ vighnaṃ, nāśayecchāpa hārakam II

148. इस ग्रंथ को पढ़ने के कारण उत्पन्न शक्ति से, सभी प्रकार

के कष्ट दूर हो जाते हैं। धार्मिकता (नैतिकता), धन संचय, सभी प्रबल इच्छाओं की पूर्ति, और मुक्ति या मोक्ष आदि चारों प्रकार की पूर्ति होती है। जिस प्रकार की इच्छा से अध्ययन किया गया वह सब कुछ पूर्ण होता है।

सर्वबाधा प्रशमनं, धर्मार्धकाममोक्षदम् ।

यं यं चिंतयते कामं, तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥

sarvabādhā praśamanaṃ, dharmārdhakāmamokṣadam I

yaṃ yaṃ ciṃtayate kāmaṃ, taṃ taṃ prāpnoti niścitam II

149. जो लोग भौतिकता की पूर्ति के उद्देश्य से इस ग्रंथ की पुनरावृत्ति करते हैं, उनके लिए यह ग्रंथ कामधेनु गाय है। भौतिकवादी इच्छाओं की पूर्ति के लिए, यह ग्रंथ कल्प वृक्ष के जैसा है। जो लोग चिंताग्रस्त हैं या व्याकुलता के विचारों से परेशान हैं, उनके लिए यह नागमणि की तरह है। गुरु गीता की पुनरावृत्ति हर तरह से बहुत शुभ है।

कामितस्य कामधेनुः, कल्पना कल्पपादपः ।

चिंतामणि श्चिंतितस्य, सर्वमंगळ कारकम् ॥

kāmitasya kāmadhenuḥ, kalpanā kalpapādapaḥ I

ciṃtāmaṇi ściṃtitasya, sarvamaṃgaḻa kārakam II

150. हे देवी! गुरु गीता का अध्ययन बिना किसी भी पक्षपात के सभी के लिए फल देता है। चाहे वे ब्रह्मांडीय ऊर्जा, सूर्य देवता, गणेश भगवान, भगवान विष्णु (ब्रह्मांड के पालनहार) या भगवान शिव (ब्रह्माण्ड का नाश करने वाले) के उपासक हैं । यह परम सत्य है। इसमें कोई भी संदेह नहीं है!

जपेच्छाक्तश्च सौरश्च, गाणापत्यश्च वैष्णवः ।

शैवश्च सिद्धिदं देवि, सत्यं सत्यं न संशयः ॥

japecchāktaśca sauraśca, gāṇāpatyaśca vaiṣṇavaḥ I

śaivaśca siddhidaṃ devi, satyaṃ satyaṃ na saṃśayaḥ II

151. जो लोग इस ग्रंथ को प्रतिदिन मोक्ष या आत्मसाक्षात्कार के उद्देश्य से पढ़ते हैं, उनके लिए भौतिक समृद्धि के साथ-साथ मोक्ष भी प्राप्त होता है। जो लोग भौतिकता की पूर्ति चाहते हैं, उनके सभी मनोरथ पूरे होते हैं।

मोक्षहेतुर्जपेनित्यं मोक्षश्रियमप्नुयात् ।

भोगकामो जपेद्योवै तस्यकाम फलप्रदम् ॥

mokṣaheturjapenityaṃ mokṣaśriyamapnuyāt I

bhogakāmo japedyovai tasyakāma phalapradam II

152-154. हे कामायनी! अब मैं आपसे उन स्थानों का वर्णन

करूँगा, जहाँ पर इस ग्रंथ की पुनरावृत्ति होनी चाहिए ताकि वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें। समुद्र, नदी तट, भगवान विष्णु का मंदिर या भगवान शिव, देवी माता (या ब्रह्मांडीय ऊर्जा या शक्ति), गौशाला, किसी भी भगवान या देवी से संबंधित कोई भी मंदिर (कोई भी पूजा का स्थान) जैसे स्थान इस ग्रंथ के अध्ययन के लिए शुभ हैं । इसी प्रकार, किसी पवित्र वृक्ष के नीचे, किसी पवित्र स्थान पर, पवित्र तुलसी के पौधे के बगीचे में और किसी भी शुद्ध और शांत स्थान पर, बरगद के पेड़ के नीचे भी इसका अध्ययन किया जा सकता है। इसका अध्ययन चुपचाप और दैनिक रूप से पूर्ण वैराग्य के साथ करना चाहिए।

अथकाम्य जपे स्थानं, कथयामि वरानने ।

सागरेवा सरित्तीरेऽधवा हरि हरालये ॥

शक्ति देवालये गोष्ठे, सर्व देवालये शुभे ।

वटे च धात्रि मूले वा, मठेवृंदावने तथा ॥

पवित्रे निर्मले स्थाने, नित्यानुष्ठान तोऽपिवा ।

निर्वेदनेन मौनेन, जपमेतं समाचरेत् ॥

athakāmya jape sthānaṃ, kathayāmi varānane I

sāgarevā sarittīre'dhavā hari harālaye II

śakti devālaye goṣṭhe, sarva devālaye śubhe I

vaṭe ca dhātri mūle vā, maṭhevṛṃdāvane tathā II

pavitre nirmale sthāne, nityānuṣṭhāna to'pivā I

nirvedanena maunena, japametaṃ samācaret II

155. यदि कोई श्मशान घाट में, बरगद के पेड़ की छाया में, धतूरे के पेड़ की जड़ के पास या आम के पेड़ की छाया में बैठकर इसका पाठ करता है, तो यह शीघ्र फल देता है।

स्मशाने भयभूमौतु, वटमूलान्तिके तथा ।

सिद्ध्यन्ति धौत्तरेमूले, चूतवृक्षस्य सन्निधौ ॥

smaśāne bhayabhūmautu, vaṭamūlāntike tathā I

siddhyanti dhauttaremūle, cūtavṛkṣasya sannidhau II

156. भले ही एक दुर्बुद्धि (मूर्ख दिमाग वाला) व्यक्ति जिसे एक आदरणीय गुरु द्वारा शिष्य के रूप में स्वीकार किया गया हो, योग (संस्कृत में साधना) करता है, वह सभी सफलताओं को प्राप्त होता है। इसके विपरीत, यहां तक कि सर्वाधिक विद्वान व्यक्ति (संस्कृत में पंडित) द्वारा किए गए शुभ / धार्मिक कार्य, योग की दीक्षा, धार्मिक अनुष्ठान, गंभीर तपस्या / चुनौतीपूर्ण योग साधनाएं, आदि फलदायी नहीं होंगे, यदि किसी आदरणीय गुरु ने दीक्षा देकर अनुमोदन न किया हो। अर्थात आदरणीय गुरु के बिना किसी व्यक्ति को कुछ नहीं मिलेगा चाहे वह मूर्ख हो या शिक्षित।

गुरुपुत्रो वरं मूर्खस्तस्य सिध्यन्ति नान्यथा ।

शुभकर्माणि सर्वाणि दीक्षाव्रत तपांसि च ll

guruputro varaṃ mūrkhastasya sidhyanti nānyathā I

śubhakarmāṇi sarvāṇi dīkṣāvrata tapāṃsi ca II

157. गुरु गीता के जल से नियमित रूप से स्नान करते रहना चाहिए (अर्थात इस ग्रंथ का नियमित रूप से अध्ययन करते रहना चाहिए)। दोषों का (भौतिकवादी / सांसारिक वस्तुओं के प्रति रुचि के रूप में) संचय होने से रोकने के लिये, स्वयं को मजबूत मानवीय संवेदनाओं से मुक्त करने के लिए, और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने के लिए, गुरु गीता का नियमित अध्ययन नितांत आवश्यक है।

संसार मल नाशार्थं, भवपाश निवृत्तये l

गुरुगीताम्भसि स्नानं, तत्त्वज्ञः कुरुते सदा ll

saṃsāra mala nāśārdhaṃ, bhavapāśa nivṛttaye I

gurugītāmbhasi snānaṃ, tattvajñaḥ kurute sadā II

158. जो भी ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का अनुभव करता है वह वास्तव में एक आदरणीय गुरु बन जाता है। जहाँ ऐसे आदरणीय गुरु का वास होता है वह स्थान वास्तव में पवित्र है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

स एवच गुरुः साक्षात्, सदा सद् ब्रह्मवित्तमः l

तस्य स्थानानि सर्वाणि, पवित्राणि न संशयः ॥

sa evaca guruḥ sākṣāt, sadā sad brahmavittamaḥ I

tasya sthānāni sarvāṇi, pavitrāṇi na saṃśayaḥ II

159. जहाँ भी ऐसे पवित्र और वंदनीय गुरु का वास होता हैं, सभी देवी / देवता भी वहाँ अवश्य निवास करते हैं।

सर्वशुद्धः पवित्रोऽसौ स्वभावा द्यत्र तिष्ठतिः ।

तत्र देवगणाः सर्वे क्षेत्रे पीठे वसन्तिहि ॥

sarvaśuddhaḥ pavitro'sau svabhāvā dyatra tiṣṭhatiḥ I

tatra devagaṇāḥ sarve kṣetre pīṭhe vasantihi II

160-161. बुद्धिमान व्यक्ति गुरु गीता का हमेशा पाठ करते हैं, चाहे वे ध्यान मुद्रा में बैठे हों, नींद की मुद्रा में लेटे हों, पैदल चल रहे हों, या बातचीत कर रहे हों, घोड़े पर सवार (सवारी करते समय या यात्रा करते हुए) हों, या हाथी पर बैठे हों। चाहे वह सुप्तावस्था (विचलित या अनमने) में हो, अथवा जाग्रत अवस्था (सचेत या उपासना) में हों। जो कोई भी गुरु गीता का पाठ होते देख भर लेता है उसका पुनर्जन्म नहीं हो सकता है (अर्थात गुरु गीता के अध्ययन का फल असीम है)।

आसनस्थः शयना वा गच्छँस्तिष्ठन्वदन्नपि ।

अश्वारूढो गजारूढः सुप्तो वा जागृतोऽपि वा ॥

शुचिषांश्च सदाज्ञानी, गुरुगीता जपेन तु ।

तस्यदर्शन मात्रेण, पुनर्जन्म न विद्यते ॥

āsanasthaḥ śayanā vā gaccham̐stiṣṭhanvadannapi I

aśvārūḍho gajārūḍhaḥ supto vā jāgṛto'pi vā II

śuciṣāṃśca sadājñānī, gurugītā japena tu I

tasyadarśana mātreṇa, punarjanma na vidyate II

162-163. जिस प्रकार समुद्र में पानी विलीन हो जाता है, दूध दूध के साथ विलीन हो जाता है, शुद्ध मक्खन शुद्ध मक्खन के साथ विलीन हो जाता है, एक बर्तन के भीतर का खाली स्थान बाहरी खाली स्थान के साथ विलीन हो जाता है, व्यक्तिगत आत्मा, परमात्मा या सर्वशक्तिमान या ईश्वर में विलीन हो जाती है। इसी प्रकार बुद्धिमान मनुष्य इस भौतिकवादी संसार में दिन और रात की तरह घूमते हुए भी हमेशा परम आत्मा के साथ मिलन की स्थिति में होते हैं। अर्थात बुद्धिमान व्यक्ति इस सांसारिक जीवन से भावनात्मक रूप से अलग हो जाते हैं, हालांकि वे जीवित रहते हैं।

समुद्रे च यथा तोयं, क्षीरे क्षीरं – घृते घृतम् ।

भिन्ने कुम्भे यथाकाशः, स्तथात्म परमात्मनि ॥

तथैव ज्ञानी जीवात्मा, परमात्मनि लीयते ।

ऐक्येन रमते ज्ञानी, यत्र तत्र दिवानिशम् ॥

samudre ca yathā toyaṃ, kṣīre kṣīraṃ – ghṛte ghṛtam I

bhinne kumbhe yathākāśaḥ, stathātma paramātmani II

tathaiva jñānī jīvātmā, paramātmani līyate I

aikyena ramate jñānī, yatra tatra divāniśam II

164-166. हे पार्वती! इस तरीके से, बुद्धिमान मुक्त आत्माओं की श्रेणी में आते हैं। समर्पित मन से किए गए ईमानदार प्रयासों के कारण, वे (बुद्धिमान / योग साधक) सभी प्रकार के संदेह से मुक्त हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति सांसारिक भोग के साथ-साथ मोक्ष (दोनों) का अनुभव भी करते है। इसके अलावा, वाणी की देवी (देवी सरस्वती) भी ऐसे व्यक्ति की जिव्हा पर सदैव विराजमान रहती हैं। इस ग्रंथ के अध्ययन या सस्वर पाठ के कारण सभी प्रकार की अलौकिक शक्तियों को प्राप्त करने के बाद, अंत में मोक्ष या आत्मसाक्षात्कार होता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

एवं विधो महामुक्तः सर्वदा वर्तते बुधः ।

तस्य सर्वप्रयत्नेन, भावभक्तिं करोति यः ॥

सर्व सन्देह रहितो, मुक्तो भवति पार्वति ।

भुक्ति मुक्ति द्वयं तस्य, जिह्वाग्रे च सरस्वती ॥

अनेन प्राणिनः सर्वे, गुरुगीता जपेन तु ।

सर्वसिद्धिं प्राप्नुवन्ति, भुक्तिं मुक्तिं न संशयः ॥

evaṃ vidho mahāmuktaḥ sarvadā vartate budhaḥ I

tasya sarvaprayatnena, bhāvabhaktiṃ karoti yaḥ II

sarva sandeha rahito, mukto bhavati pārvati I

bhukti mukti dvayaṃ tasya, jihvāgre ca sarasvatī II

anena prāṇinaḥ sarve, gurugītā japena tu I

sarvasiddhiṃ prāpnuvanti, bhuktiṃ muktiṃ na saṃśayaḥ II

167. हे सुंदरी! (यहां भगवान शिव अपने जीवनसाथी को ब्रह्मांडीय ऊर्जा कह कर संबोधित कर रहे हैं) यहां तक कि अन्य महान शिक्षाएं जैसे धर्म (नियमित मानव जीवन में आचरण का सही तरीका) और सांख्य (छह प्राचीन भारतीय दर्शनों में से एक जो ब्रह्मांड के 36 गुणों में से स्थूल जगत और सूक्ष्म जगत के विकास का वर्णन करता है) भी इस पाठ की बराबरी नहीं कर सकते हैं। यह सच है! वास्तव में यही सत्य है!

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, धर्मं सांख्यं मयोदितम् ।

गुरुगीता समं नास्ति, सत्यं सत्यं वरानने ॥

satyaṃ satyaṃ punaḥ satyaṃ, dharmaṃ sāṃkhyaṃ mayoditam I

gurugītā samaṃ nāsti, satyaṃ satyaṃ varānane II

168. आदरणीय गुरु से श्रेष्ठ कोई भी नहीं है। प्रकृति का कोई तत्व या सार ऐसा नहीं है जो एक आदरणीय गुरु से श्रेष्ठ हो। केवल एक ही वस्तु है जो सही या धार्मिक है और वह आदरणीय गुरु है। केवल एक ही विश्वास है जिसे अभ्यास करने की आवश्यकता है और यह एक आदरणीय गुरु के प्रति है। केवल एक ही ईश्वर है और वह एक आदरणीय गुरु है।

एकोदेव एक धर्म एक निष्टा परंतपः ।

गुरोः परतरं नान्यत्, नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥

ekodeva eka dharma eka niṣṭā paraṃtapaḥ I

guroḥ parataraṃ nānyat, nāsti tattvaṃ guroḥ param II

169. हे, देवी! ऐसे दुर्लभ व्यक्ति की माता सौभाग्यशाली है, जो एक आदरणीय गुरु के प्रति इतनी उच्च श्रद्धा रखता है। उनके पिता भी सौभाग्यशाली हैं। इसके अलावा, उनका पैतृक पारिवारिक वंश सौभाग्यशाली है। इसके अलावा, उसका कबीला / जाति भाग्यशाली है। इसके अलावा, यहां तक कि वह भूमि जहां ऐसा व्यक्ति निवास करता है वह भाग्यशाली है।

माता धन्या पिताधन्यो, धन्योवंशः कुलंतथा ।

धन्याच वसुधादेवि, गुरुभक्तिः सुदुर्लभा ॥

mātā dhanyā pitādhanyo, dhanyovaṃśaḥ kulaṃtathā I

dhanyāca vasudhādevi, gurubhaktiḥ sudurlabhā II

170. हे, देवी! किसी व्यक्ति का शरीर, और उसके कामुक अंग, जीवन शक्ति, धन, परिवार, रिश्तेदार, माता, पिता, जाति, इत्यादि, एक आदरणीय गुरु के बराबर नहीं हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

शरीरमिन्द्रिय प्राणश्चार्थः स्वजन बांधवाः ।

मातापिताकुलंदेवि, गुरुरेव न संशयः ॥

śarīramindriya prāṇaścārthaḥ svajana bāṃdhavāḥ I

mātāpitākulaṃdevi, gurureva na saṃśayaḥ II

171. हे, देवी! मंत्र, ध्यान, और कठोर योग प्रथाओं, आदि पिछले करोड़ों जन्मों कि तपस्याओं में किये गए तप का फल एक व्यक्ति को उसके आदरणीय गुरु द्वारा उस पर की गयी कृपा से प्राप्त हो सकता है। उपर्युक्त सभी प्रकार के कार्य अंत में केवल तभी फलित होते हैं जब एक आदरणीय गुरु उस व्यक्ति से संतुष्ट होता है जिसने यह सभी कार्यों को किया है।

आ कल्पं जन्मनाकोट्य, जपव्रत तपः क्रियाः ।

तत्सरं सफलंदेवि, गुरुसंतोष मात्रतः ll

ā kalpaṃ janmanākoṭya, japavrata tapaḥ kriyāḥ I

tatsaraṃ saphalaṃdevi, gurusaṃtoṣa mātrataḥ II

172. हे सुंदरी! यदि कोई अभागा व्यक्ति अपने आदरणीय गुरु की सेवा नहीं करता है, तो उसका सारा ज्ञान, ध्यान और शक्ति किसी काम की नहीं है (वे विफल हो जाती हैं)। यह सच है! यह सार्वभौम सत्य है!

विद्यातपो बलेनैव, मन्द भाग्याश्च ये नराः l

गुरुसेवां नकुर्वन्ति, सत्यं सत्यं वरानने ll

vidyātapo balenaiva, manda bhāgyāśca ye narāḥ I

gurusevāṃ nakurvanti, satyaṃ satyaṃ varānane II

173-174. एक आदरणीय गुरु की कृपा के बिना भगवान ब्रह्मा (ब्रह्मांड के निर्माता), भगवान विष्णु (ब्रह्मांड के स्वामी), भगवान महेश्वर या शिव (प्रत्येक युग के अंत में ब्रह्मांड को नष्ट करने वाले), विभिन्न देवता, पूर्वजों की आत्माएं, दैवीय संगीतकार, द्रष्टा, स्तुति के दिव्य गायक, धन के रक्षक, ऋषि, आदि अपने-अपने कर्तव्यों को करने में सफल नहीं हो सकते। हे, देवी! एक आदरणीय गुरु की भक्ति से अधिक पावन कोई भी पवित्र वसंत नहीं है। ऐसे कोई भी पावन और पवित्र वसंत व्यर्थ हैं। वास्तव

में, ऐसे सभी पावन झरनों की उत्पत्ति आदरणीय गुरु के पैर की बड़ी उंगली से होती है।

ब्रह्मविष्णु महेशाश्च, देवर्षि पितृ किन्नराः ।

सिद्ध चारण यक्षाश्च, अन्येऽपि मुनयो जनाः ॥

गुरुभावः परं तीर्थ, अन्यतीर्थं निरर्धकम् ।

सर्वतीर्थाश्रयं देवि, पादाङ्गष्ठं च वर्तते ॥

brahmaviṣṇu maheśāśca, devarṣi pitṛ kinnarāḥ I

siddha cāraṇa yakṣāśca, anye'pi munayo janāḥ II

gurubhāvaḥ paraṃ tīrtha, anyatīrthaṃ nirardhakam I

sarvatīrthāśrayaṃ devi, pādāṅgaṣṭhaṃ ca vartate II

175. **सभी कम-योग्यता वाली क्रियाओं का त्याग करें, सभी निषिद्ध स्नान का त्याग करें और इस ग्रंथ का पाठ करें ताकि सफलता मिल सके।**

जपेन जयमाप्नोति, चानन्त फलमाप्नुयात् ।

हीन कर्मत्यजेत्सर्वं, स्थानानि चाधमानि च ॥

japena jayamāpnoti, cānanta phalamāpnuyāt I

hīna karmatyajetsarvaṃ, sthānāni cādhamāni ca II

176-177. निषिद्ध आसन पर बैठकर इस ग्रंथ का पाठ करने से कम योग्यता वाली क्रियाओं का फल मिलेगा। प्रत्युत, एक यात्रा की कालावधि में, एक युद्ध की अवस्था में, जब इस ग्रंथ को पढ़कर दुष्ट शत्रुओं पर सफलता प्राप्त होती है। यदि कोई मृत्यु के समय इसका पाठ करता है, तो मोक्ष या आत्मबल की प्राप्ति होती है। प्रत्येक स्थान पर समर्पित शिष्यों (जो इस ग्रंथ का पाठ करते हैं) के सभी प्रयास फलदायी होंगे।

जपं हीनासनं कुर्वन्, हीनकर्म फलप्रदम् ।

गुरुगीतां प्रयाणेवा, संग्रामे रिपुसंकटे ॥

जपन् जयमवाप्नोति, मरणे मुक्तिदायकम् ।

सर्वकर्मच सर्वत्र, गुरुपुत्रस्य सिद्धयति ॥

japaṃ hīnāsanaṃ kurvan, hīnakarma phalapradam I

gurugītāṃ prayāṇevā, saṃgrāme ripusaṃkaṭe II

japan jayamavāpnoti, maraṇe muktidāyakam I

sarvakarmaca sarvatra, guruputrasya siddhayati II

178. (भगवान शंकर या शिव, देवी पार्वती को समझा रहे हैं) गुरु गीता के इस रहस्य को प्रकट न करें जो मैंने आपको किसी को भी आकस्मिक रूप से बताया है। यह बहुत ही गुप्त ज्ञान है। मैंने तुम्हें इसका भेद खोल दिया है क्योंकि तुम मेरी प्यारी पत्नी

हो।

इदं रहस्यं नो वाच्यं, तवाग्रे कधितं मया।

सुगोप्यं च प्रयत्नेन, ममत्वंच प्रियात्विति ॥

idaṃ rahasyaṃ no vācyaṃ, tavāgre kadhitaṃ mayā I

sugopyaṃ ca prayatnena, mamatvaṃca priyātviti II

179. इस रहस्य को अपने स्वयं के पुत्रों कार्तिकेय और गणपति, भगवान विष्णु, और अन्य देवपुरुषों को भी प्रकट न करें यदि उन्हें इस शिक्षा में विश्वास नहीं है।

स्वामी मुख्य गणेशादि, विष्णवादीनां च पार्वति।

मनसापि न वक्तव्यं, सत्यं सत्यं वदाम्यहं ॥

svāmī mukhya gaṇeśādi, viṣṇavādīnāṃ ca pārvati I

manasāpi na vaktavyaṃ, satyaṃ satyaṃ vadāmyahaṃ II

180. इस गुरु गीता का भेद केवल उन लोगों के लिए प्रकट किया जाना चाहिए जिनके पास पूरी तरह परिपक्व और समर्पित मस्तिष्क है।

अतीव पक्व चित्ताय, श्रद्धा भक्ति युतायच।

प्रवक्तव्यमिदं देवि, ममात्माऽसि सदाप्रिये ॥

atīva pakva cittāya, śraddhā bhakti yutāyaca I

pravaktavyamidaṃ devi, mamātmā'si sadāpriye II

181. इस ग्रंथ को उन लोगों के मध्य प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए, जिनके पास भक्ति की कमी है, धोखा देने की प्रवृत्ति है, दुष्ट हैं, नास्तिक हैं, इत्यादि। ऐसे व्यक्तियों को इसका भेद खोलने के बारे में सोचना भी नहीं चहिये।

अभक्ते वंचके धूर्ते, पाखण्डे नास्तिके नरे ।

मनसापि न वक्तव्या गुरुगीता कदाचना ॥

abhakte vaṃcake dhūrte, pākhaṇḍe nāstike nare I

manasāpi na vaktavyā gurugītā kadācanā II

182. गुरु गीता सभी मंत्रों का राजा है। यह किसी को भी संसार सागर से बचाएगा। इस तरह का आरोप लगाया गया है, कि ब्रह्मा (ब्रह्मांड के निर्माता) आदि देवताओं की शक्ति से संचालित इस मंत्र (गुरु गीता) से सभी दुख, दुःख, भय और निराशा दूर हो जाएगी। इस महान मंत्र को प्रणाम जो सबसे बड़ी आशंकाओं को दूर कर सकता है! (इस ग्रंथ का पाठ पूरा करने के बाद, अंतिम वाक्य को सामान्य नियम के रूप में एक बार फिर से पढ़ा जाना चाहिए। और अंत में "ओम नमः इति" का उच्चारण करके इस पाठ को समाप्त करना चाहिए।)

संसार सागर समुद्धरणैक मंत्रम्

ब्रह्मादिदेव मुनि पूजित सिद्धमंत्रम् I

दारिद्र्य दुःख भयशोक विनाश मंत्रम्

वंदे महाभयहरं गुरुराज मंत्रम् II

saṃsāra sāgara samuddharaṇaika maṃtram

brahmādideva muni pūjita siddhamaṃtram I

dāridrya duḥkha bhayaśoka vināśa maṃtram

vaṃde mahābhayaharaṃ gururāja maṃtram II

शब्दावली

आज्ञा चक्र - एक मानव शरीर में दोनों भृकुटी के मध्य अवस्थित शक्ति केंद्र|

अनाहत चक्र - रीढ़ की हड्डी पर हृदय क्षेत्र में अवस्थित शक्ति केंद्र |

अनाहत ध्वनि - किसी भी वस्तु पर प्रहार के बिना ध्वनि उत्पादन और आंतरिक रूप से एक व्यक्ति द्वारा सुना जा सकता है |

आनंदमय कोष - आनंद का आवरण । यह व्यक्ति की आत्मा पर गठित पहली परत या लौकिक भ्रम के रूप में आत्मा है | मौलिक शक्ति इस स्तर पर अपने सबसे सूक्ष्म और मूलभूत स्वरूप में है |

अन्नमय कोष - 'अन्न का आवरण' | यह सकल मानव शरीर के रूप में व्यक्तिगत आत्मा पर गठित पांचवी और अंतिम परत है |

आश्रम - योग आश्रयस्थल | यह एक गुरु या आदरणीय शिक्षक का निवास है जिनके प्रत्यक्ष निगरानी के अधीन लोग योग अभ्यास करते हैं |

ब्रह्म - पूरे ब्रह्मांड और उससे भी आगे सर्वव्यापी सर्वोच्च दिव्यता या भगवान या सर्वशक्तिमान आदि |

बुद्धि- यह ब्रह्मांडीय शक्ति का एक रूप है जिसे व्यक्ति का 'दिमाग' कहा जाता है या विवेक की क्षमता जिस में अहंकार सह-स्थित है |

चित्त - एक व्यक्ति के मन की सामग्री | यह सभी इंद्रियों का आधार है जहां व्यक्ति द्वारा स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग किया जाता है |

चित्त शक्ति – यह मन में कार्यशील ब्रह्मांडीय शक्ति का एक रूप है जिसे अलौकिक शक्ति कहा जाता है |

चक्र - मस्तिष्कमेरु प्रणाली में एक शक्ति केंद्र |

गुरु - आदरणीय शिक्षक जो एक छात्र के मन से अंधकार या अज्ञान दूर करते हैं, जिससे स्व के भीतर पहले से ही विद्यमान ज्ञान का प्रकाश चमकने लगता है |

गुण - मन सामग्री के तीन गुण |

कारण शरीर- व्यक्ति की वशीभूत आत्मा या ब्रह्मांडीय भ्रम से घिरी आत्मा है | इसे कारण शरीर कहा जाता है |

क्रिया - सभी ऐन्द्रिय प्रभावों से व्यक्ति के मन को शुद्ध करने के लिए जो शरीर, मन और बाहरी दैनिक जीवन में अनैच्छिक प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट होता है |

कुंडलिनी - सर्वोच्च मौलिक ब्रह्मांडीय शक्ति जो ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होती है | यह शक्ति गुदा और जननांग क्षेत्र के ठीक बीच प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्कमेरु प्रणाली के आधार पर अवस्थित है |

कुंभ मेला - यह एक नदी महोत्सव है जो गंगा नदी के तट पर भारत में हर बारह वर्ष में एक बार मनाया जाता है |

मनोमय कोष - यह व्यक्ति की आत्मा या जीवात्मा पर गठित तीसरा कोष है | यह सभी इंद्रियों का स्थान है जहां स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग किया जाता है |

माया - लौकिक भ्रम या अपने सबसे मौलिक रूप में ब्रह्मांडीय शक्ति |

मणिपुर चक्र - यह मानव शरीर में मस्तिष्कमेरु प्रणाली के नाभि क्षेत्र में अवस्थित शक्ति केंद्र है |

मणि द्वीप- यह सर्वोच्च मौलिक ब्रह्मांडीय शक्ति का वास है | इसे 'रत्नों का टापू' कहा जाता है और यह 'आनंद के सागर' से घिरा हुआ है |संस्कृत ग्रंथों

के अनुसार यह विविध असंख्य सांसारिक प्रणालियों से बहुत दूर विशाल और अनंत ब्रह्मांड के अंदर बहुत गहराई में स्थित है |

मंत्र - यह एक पवित्र संस्कृत अक्षर या शब्द या वाक्य या वाक्यों का एक समूह है जो पाठ्य सामग्री के किसी भी मात्रा में हो सकता है |

मूलाधार चक्र - गुदा और जननांग क्षेत्र के ठीक बीच मस्तिष्कमेरु प्रणाली के आधार पर अवस्थित ऊर्जा शक्ति केंद्र |

ॐ- यह पवित्र संस्कृत अक्षर या ध्वनि या मंत्र है जो स्वयं मौलिक ब्रह्मांडीय शक्ति के स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है !

पराशक्ति – सर्वोच्च मौलिक ब्रह्मांडीय शक्ति |

प्राणमय कोष - यह व्यक्ति की आत्मा या जीवात्मा के चारों ओर आच्छादित चौथा कोष है | इसे 'जीवन बल का आवरण' कहा जाता है !

प्रकृति - यह मूल रूप से शक्ति का स्थूल रूप या ब्रह्मांड या प्रकृति है |

प्राण - यह ब्रह्मांडीय शक्ति या पूरे ब्रह्मांड में सर्वव्यापी गतिज ऊर्जा का एक रूप है | यह मानव शरीर में जीवन बल के आवरण में सर्वव्यापी जीवन शक्ति भी है |

राजस - मन के तीन गुणों में से एक जिस के कारण सभी रूपों में सृजनात्मकता प्रकट होती है |

सात्विक- मन की तीन गुणों में से एक है जिसके कारण रखरखाव या जीविका के कार्य सभी रूपों में प्रकट होता है |

समाधि - यह अविचारशीलता की एक अवस्था है | यह आत्म-बोध होने से पहले सभी योग प्रणाली का अंतिम उद्देश्य है !

शैव - भगवान शिव के अनुयायियों का दर्शनशास्त्र, जो हिंदुओं के तीन देवताओं में से एक हैं जिन्हें एक साथ त्रिदेव के रूप में जाना जाता है |

शक्तिपात –'शक्ति का अवतरण' | यह सिद्ध महायोग प्रणाली में एक साधक को दीक्षा देने के लिए शक्तिपात पद्धति के संतों द्वारा प्रयोग किया गया एक तकनीक है |

शक्ति - मौलिक ब्रह्मांडीय शक्ति |

शक्ति पीठ- मौलिक ब्रह्मांडीय शक्ति केंद्र |

सिद्ध महायोग - व्यक्ति में कुंडलिनी शक्ति जागरण के पश्चात् भव्य योग प्रणाली जिसमें सभी व्यक्तिगत योग प्रणालियां सम्मिलित हैं | यह शक्तिपात पद्धति द्वारा अंगीकृत एक योग प्रणाली है |

स्वाधिष्ठान चक्र - यह मस्तिष्कमेरु प्रणाली में जननांग क्षेत्र की जड़ के पास स्थित शक्ति केंद्र है |

सूक्ष्म शरीर - सूक्ष्म शरीर जिसमें सकल भौतिक शरीर के अलावा अन्य सभी कोष विद्यमान हैं | यह शरीर अपनी मृत्यु के पश्चात् भौतिक शरीर त्याग देता है और पुनः अवतार लेता है |

तमस - दिमाग के तीन गुणों में से एक जिसके कारण सभी रूपों में विनाश प्रकट होता है |

तन्द्रा- योग ग्रंथों के अनुसार यह स्वप्न और जाग्रत के मध्य की एक अवस्था है |

तांत्रिक - तंत्र के साधक | योग प्रणाली का एक प्रकार |

वैष्णो देवी - भारत में जम्मू-कश्मीर राज्य में हिमालय में त्रिकुटा पर्वत पर स्थित देवी पीठ | यह शक्ति केंद्र सबसे लोकप्रिय आस्था स्थल है |

विशोक - दु: ख का विलोम |

विज्ञानमय कोष - कारण शरीर पर गठित दूसरा आवरण | बुद्धि और अहंकार इस कोष में सह स्थित है | इसमें दोनों, चेतन और अवचेतन, तथा सभी ऐन्द्रिय प्रभावों का भी निवास है |

योग - सर्वशक्तिमान के साथ व्यक्ति की आत्मा या जीवात्मा का विलय |

योगी - किसी भी योग प्रणाली के साधक |

योगिनी - किसी भी योग प्रणाली की महिला साधक |

शक्तिपात पद्धति के आश्रम

(अनुमार्गणीय और स्वायत्त)

1. महायोगिनी रचना, तारकेश्वर सिद्धयोग फाउंडेशन, भीरा खीरी, लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश, पिन - 262901, भारत, मोबाइल: +91 945 022 0221, ईमेल: tsfoundation21@gmail.com

2. सिद्धयोगिनी थनिष्का, मेलबर्न बीच, फ्लोरिडा, यूएसए, मोबाइल: +1(321)960-0445, ईमेल: supriyavarmakurup@gmail.com

3. देवी वर्तिका शुक्ला, सिद्ध महायोग फाउंडेशन, 806, न्यू आनंद अपार्टमेंट, प्लॉट 47, सेक्टर 56, गुरुग्राम, हरियाणा, पिन - 122011, भारत, मोबाइल: +91 981 996 2635, ईमेल: vartikashukla2000@gmail.com

4. सद्गुरु हागी, मेलबर्न, विक्टोरिया, ऑस्ट्रेलिया, +61 407 683 465, ईमेल: ghracer@hotmail.com

5. योगी वीरेंद्र, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत, +91 9999290388, ईमेल: virendrasfarswan@gmail.com

6. योगी अभिषेक वशिष्ठ, जयपुर, राजस्थान, भारत, +91 9079121514, ईमेल: abhijagriya@gmail.com

7. योगी गौतम, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत, +91 9963359922, ईमेल: yogi.Shaktipāt@gmail.com

8. योगिनी रम्या देवी, बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत, मोबाइल: +91 988 023 9480

9. पुनीत पाराशर, दुबई, संयुक्त अरब अमीरात, मोबाइल: +971 52 867 6684, ईमेल: puneetparashar39@gmail.com

10. योगिनी मनीषा, नई दिल्ली, भारत, मोबाइल: +91 799 110 9595

11. योगिनी विजया, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका, मोबाइल: +27 83 682 2286, ईमेल: juss@mplanet.co.za

12. महायोगिनी परमेश्वरी, जंनगांव , तेलंगाना, भारत, मोबाइल: +91 9704424072, +91 7981407323

13. शालिन कुमार, कोल्लम, केरल, भारत, मोबाइल: +91 8281219592, ईमेल: shalin_kumar@sahajananda-ashram.com

14. योगी रामगणपति, पूर्वी गोदावरी, आंध्र प्रदेश, भारत, मोबाइल: +91 9494546139, ईमेल: ramaganapathi@sahajananda-ashram.com

15. योगिनी शिखा, गुरुग्राम, हरियाणा, भारत, मोबाइल: +91 9560046782, ईमेल: shikhatiwari512@gmail.com

16. श्याम ग्वालानी, नासिक, महाराष्ट्र, भारत, मोबाइल: +91 8275798148, ईमेल: shyampgwalani@gmail.com

17. योगिनी चांदनी आत्मिका, चेन्नई, तमिलनाडु, भारत, मोबाइल: +91 9080570782

18. योगिनी श्रीदेवी, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत, मोबाइल: +91 9849590088

19. योगी भारद्वाज, रिचमंड, यूएसए, +1 (973) 393-4135
20. श्रीमती महालक्ष्मी, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश, भारत, मोबाइल: +91 80085 96898
21. योगिनी सुमित्रा देवी, राजमुंदरी, आंध्र प्रदेश, भारत, मोबाइल: +91 8309180149
22. योगिनी रमादान, लिंकन, नेब्रास्का, यूएसए, मोबाइल: +1(402)217-2363
23. योगी रंजीत, पुणे, भारत, +91 8899992493
24. योगी रंगा, हैदराबाद, भारत, +91 9866305772
25. श्री रवि कुमार कौसिक, हैदराबाद, भारत, मोबाइल: +91 8978611137
26. श्री अजय हमसागर, हैदराबाद, भारत, मोबाइल: +91 9449824331
27. श्री नागेश्वर राव, आंध्र प्रदेश, भारत, मोबाइल: +91 8639139422
28. श्री कमलेश पाड़िया, पुणे, महाराष्ट्र, +91 9765800457, +91 8530390457
29. नारायण कुटी संन्यास आश्रम, टेकरी रोड, देवास, मध्य प्रदेश, भारत, पिन - 455001, दूरभाष: +91 0727223891/31880, मोबाइल: +91 9977968108
30. स्वामी विष्णु तीर्थ साधन सेवा न्यास, 12-3, पुराना पलासिया, जोपत कोटि, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत, पिन - 452001, दूरभाष: +91 0731 566386/564081, मोबाइल: +91 9713468347
31. स्वामी शिवोम तीर्थ कुंडलिनी योग केंद्र, दुर्गा मंदिर, कलेक्टर बंगले के पास, छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत, पिन - 480001, दूरभाष: +91 07162 42640
32. स्वामी शिवोम तीर्थ आश्रम, मुकर्जी नगर, रायसन, मध्य प्रदेश,

भारत, पिन - 464551, दूरभाष: +91 07482 22294

33. स्वामी शिवोम तीर्थ महा योग आश्रम, खारी घाट, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत, पिन - 482008, दूरभाष: +91 0761 665027

34. देवात्मा शक्ति सोसाइटी, 74, नवाली गांव, पोस्ट दहिसर (मुंब्रा के माध्यम से), मुंब्रा पनवेल रोड, ठाणे जिला, महाराष्ट्र, भारत, पिन - 400612, दूरभाष: +91 022 7411400

35. शिवोम कृपा आश्रम ट्रस्ट, हाउस नंबर 28-1463/1, तेने बांदा, शिवोम नगर, चित्तौड़, आंध्र प्रदेश, भारत, पिन - 517004, दूरभाष: +91 9440069096, 08572 49048

36. योग श्री पीठ आश्रम, शिवानंद नगर, मुनि-की-रेठी, ऋषिकेश, उत्तराखंड, भारत, पिन - 249201, दूरभाष: +91 0135 430467

37. ओम कर आश्रम, वेरावल, गुजरात, भारत

38. ओम कार साधन आश्रम, आनंद, गुजरात, भारत

39. स्वामी विष्णु तीर्थ ज्ञान साधना आश्रम, कुबुडु रोड, केडी गुर्जर, गन्नूर, सोनीपत जिला, हरियाणा, भारत, दूरभाष: +91 0124 62150/61550

40. विष्णु तीर्थ सिद्ध महायोग संस्थानम, शिवोम कुटी आश्रम, कालेश्वर मंदिर के पास, बहादुरपुर रोड, अमलनेर पोस्ट, जलगांव जिला, महाराष्ट्र, भारत, पिन - 425401

41. गुरु निकेतन, शिव कॉलोनी, डबरा, ग्वालियर जिला, मध्य प्रदेश, पिन - 475110, दूरभाष: +91 07524 22153

42. स्वामी शिवोम तीर्थ आश्रम, रूट नंबर 97, पोंड एड्डी, सुलिवन कंट्री, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.

43. स्वामी महेश्वरानंद तीर्थ, सुनवाहा, रायसन जिला, मध्य प्रदेश, भारत, +91 7697648720

शक्तिपात पद्धति के संत

(अनुमार्गणीय इतिहास)

महान योगिनी लल्लेश्वरी
त्रिलोकी बाबा
स्वामी परमानन्द तीर्थ जी
स्वामी मुकुंदानंदतीर्थ जी
स्वामी गंगाधर तीर्थ जी
स्वामी नारायण देव तीर्थ जी

1. स्वामी शंकर पुरुषोत्तम तीर्थजी
    - (a) स्वामी नारायण तीर्थजी
        - (i) स्वामी नारायण यशवंत देखणे
            - (aa) ऐ एन चैटर्जी
            - (bb) आत्मानंद तीर्थ
    - (b) स्वामी लोकनाथ तीर्थजी
        - (i) स्वामी राव गुलवाणी
            - (aa) स्वामी ब्रह्म दत्तात्रेय कविश्वर
2. परम पूजनीय योगानंद जी
    - (a) स्वामी ठाकुर मान सिंह

(i) संत योगी कृपाल सिंह

(b) स्वामी दिलीप दत्त उपाध्याय

(c) माता रमा बाई

(d) <u>स्वामी विष्णु तीर्थ</u>

(i) स्वामी माधव तीर्थ

(ii) स्वामी ओमकारानन्द

(iii) स्वामी तारकेशवरानन्द तीर्थ

(iv) रामप्रकाश ब्रह्मचारी

(v) <u>स्वामी शिवोम तीर्थ</u>

(aa) स्वामी परमानन्द तीर्थ

(bb) स्वामी केवल कृष्ण तीर्थ

(cc) स्वामी गोपाल तीर्थ

(dd) स्वामी गोविंदानन्द तीर्थ

(ee) स्वामी भास्करानन्द तीर्थ

(ff) स्वामी सहजानन्द तीर्थ

(gg) स्वामी नित्यबोधानन्द तीर्थ

(hh) स्वामी निजबोधानन्द तीर्थ

(jj) स्वामी हरि ओम तीर्थ

(kk) स्वामी शिव मंगल तीर्थ

(ll) स्वामी शंकर चैतन्य तीर्थ

(mm) स्वामी आत्मबोधानन्द तीर्थ

(nn) स्वामी चेतन विलास तीर्थ

(oo) स्वामी राधा कृष्ण तीर्थ

(pp) स्वामी मुक्तानन्द तीर्थ

(qq) स्वामी विद्या तीर्थ

लेखक के बारे में

लेखक 97 वर्ष के हैं और वर्तमान में भारत के विजयवाड़ा शहर में रहते हैं। उन्हें उनके गुरु स्वर्गीय स्वामी शिवोम तीर्थ ने शक्तिपात के क्रम में दीक्षा दी थी। आदरणीय स्वामी ने हिमालय पर्वतमाला में ध्यान करते हुए पांच दशक से अधिक समय बिताया है। बाद में उन्होंने कई शिष्यों को कुंडलिनी योग के मार्ग पर लाकर शक्तिपात की परंपरा को आगे बढ़ाया।